❀ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ❀

❀ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ❀

श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रम्

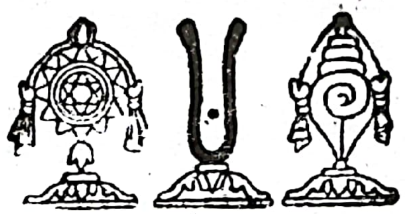






(श्रीगोपालसहस्रनामावली-सहितम्)

❀ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ❀



❀ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ❀

❀ श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्र ❀

[श्रीगोपालसहस्रनामावली-सहितम्]

आदि सम्पादक :

स्व० पं० श्रीरामगोपालजी शास्त्री

सम्पादक :

जयकिशोरशरण

निम्बार्काब्द	बसन्त पञ्चमी	न्यौछावर
५१०६	वि० सं० २०६६	तीस रुपया

प्रकाशक—
श्री "श्रीजी" मन्दिर
प्रताप बाजार, वृन्दावन

Aklesh Keshav Sharanam

मुद्रक—
श्रीसर्वेश्वर प्रेस
प्रताप बाजार, वृन्दावन

❀ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ❀

सम्पादकीय–

यद्यपि सम्मोहनतन्त्रोक्त श्रीगोपालसहस्रनाम के विभिन्न प्रकाशकों, सम्पादकों व अनुवादकों द्वारा अनेक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं, फिर भी भावुक भक्तजनों को पूर्णतया सन्तोष नहीं हो पा रहा है। इसका एकमात्र कारण अद्यावधि प्रकाशित संस्करणों की विभिन्नरूपता ही है। साथ ही प्रूफशोधन में असावधानता, पाठभेद तथा क्रमभेद आदि अन्य भी कतिपय ऐसे कारण हैं, जिनसे एकरूपता व असन्दिग्धता आ नहीं पाती। इसी समस्या के समाधान हेतु भावुक भक्तों की माँग को देखते हुए परम श्रद्धेय प्रातःस्मरणीय अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री "श्रीजी" महाराज ने अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ की ओर से प्रकाशन एवं इन पंक्तियों के लेखक द्वारा इसका सम्पादन कराने की कृपा की है।

एक बार श्रीयुत् डॉ० रामनारायणजी चतुर्वेदी (निदेशक, संस्कृत शिक्षा ने भी यह इच्छा प्रकट की थी कि गोपालसहस्रनाम का एक शुद्ध संस्करण प्रकाशित किया जाय, जिसका मूल आधार संस्कृत टीका हो। एक ऐसी ही संस्कृत टीकावाली प्रति के लिये निर्देश भी किया था, जो पण्डित रामचन्द्रजी सा० आ० के माध्यम से सुलभ हो सकती थी।

मैंने इसका भरसक प्रयास किया, किन्तु वह प्रति सुलभ नहीं हो सकी। अन्त में गवेषणा करते-करते श्रीरणछोड़दास सूरिकृत एक प्राचीन हस्तलिखित संस्कृत टीका उपलब्ध हुई। इसी को मैंने पाठक्रम में शब्द साधुत्व को दृष्टि से अपना मूल आधार बनाया।

प्रस्तुत सम्पादन के माध्यम से पूर्वोक्त समस्याओं के समाधान व सामञ्जस्य करने का यथामति प्रयास किया गया है। एतदर्थ निम्नलिखित प्रतियों का अवलोकन किया है—

१.	श्रीगोपालसहस्रनाम विवृति :	(श्रीरणछोड़दास कृत संस्कृत टीका) [हस्तलिखित प्रति–लिपिकाल सं० १९५५]
२.	श्रीगोपालसहस्रनाम विवृति :	(प्राचीन हस्तलिखित)
३.	,, ,, ,,	(सं० १९२६ की हस्तलिखित प्रति के आधार पर प्रकाशित)
४.	,, ,, ,,	(महात्मा गोपालदासकृत हिन्दी अनुवाद - प्रकाशित)
५.	गोपालार्चन सृति :	(माईथान, आगरा से प्रकाशित)
६.	गोपालसहस्रनाम :	(भाषा टीका) गोपाल बुक डिपो, मथुरा
७.	,,	(मूल) हनुमान शर्मा चौमू से प्राप्त व गुलाबचन्द देवीलाल जयपुर द्वारा प्रकाशित

८.	,, ,,	(ईश्वरलाल बुकसेलर, जयपुर)
९.	,, ,, ,,	(पुस्तक मन्दिर, मथुरा)
१०.	गोपालसहस्रनाम	(श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई)
११.	,, ,,	(स्थल, उदयपुर, राज०)
१२.	,, ,,	(भार्गव पुस्तकालय, बनारस)
१३.	,, ,,	(देहाती पुस्तक भण्डार, देहली)
१४.	श्रीगोपालपंचांग	(जड़ौलापाड़ा, समर्थीशाला, धौलपुर)
१५.	श्रीनिम्बार्कप्रभा	(श्रीनिम्बार्क आश्रम, वल्लभीपुर, भावनगर सौराष्ट्र)

अन्तिम दो पुस्तकों में बड़ा गोपालसहस्रनाम है, जिनमें लगभग १५०० नाम हैं। इसकी अभी तक कोई नामावली दृष्टिगोचर नहीं हुई। लगभग २५ वर्ष पूर्व भी उक्त गोपालपंचाग (बम्बई से प्रकाशित) की एक प्रति परम श्रद्धेय अधिकारी श्रीव्रजवल्लभ-शरणजी वेदान्ताचार्य के माध्यम से प्राप्त हुई थी। पूज्यापाद श्रीमहन्त हरिवल्लभदासजी शास्त्री (रैणवाल) की भी प्रेरणा थी कि इसका सहस्रनामावली के रूप में संकलन किया जाय। कुछ वर्ष पूर्व एक और भी महात्मा ने मुझे इस दिशा में प्रेरित किया, जिनके लिये लोक में चाहे मूर्ख अरण्य जैसे शब्द व्यवहृत किये जाते हों किन्तु वास्तव में ये विविध आगम व उपासना के मार्मिक विद्वान् हैं। आपके द्वारा उपदिष्ट पद्धति के आधार पर

संप्राप्त संस्फुरण के अनुसार उक्त नामावली का अर्द्धाधिक भाग मैंने तैयार कर लिया था पर किसी प्रबल दुरदृष्ट के कारण संपूर्ति नहीं हो सकी। इसे पूर्ण करके प्रचार में लाना एक टेढ़ीखीर भी बन गई थी, क्योंकि अधिकांश प्रचलित हजार नाम वाला "गोपाल-सहस्रनाम" उपासना-क्षेत्र में श्रद्धा, विश्वास व सिद्धि को प्राप्त हो चुका है। विरल प्रचार वाला दूसरा (बड़ा) गोपालसहस्रनाम इसके स्थान को सरलता से ग्रहण नहीं कर सकता। "चमत्कार को नमस्कार" वाली बात को देखते हुये विपुल प्रचार वाला अनुभूत यह ही सहस्रनाम सामञ्जस्य के प्रयासार्थ उपयुक्त समझा गया।

❀ संमोहनतन्त्र या गौतमीयतन्त्र ❀

विद्वत्समाज में यह भी एक चर्चा का विषय बन गया है कि "विरल प्रचार वाला वह बड़ा गोपालसहस्रनाम ही वास्तव में सम्मोहनतन्त्र का है। जिसका विपुल प्रचार है, वह गौतमीयतन्त्र का है।" इसका सही निर्णय तो तभी किया जा सकता है जबकि मूल दोनों तन्त्र उपलब्ध हों। जितनी भी गोपालसहस्रनाम की पुस्तकें मिलती हैं, सभी में "इति श्री सम्मोहनतन्त्रे......." लिखा मिलता है–अतः उक्त चर्चा प्रामाणिक नहीं कही जा सकती। श्रद्धालु भक्तों के लिये ऐसा भ्रमोत्पादन उचित भी नहीं है अनुभूत गोपाल-सहस्रनाम की प्राचीन से प्राचीनतम हस्तलिखित प्रतियों में भी जब सम्मोहनतन्त्रोक्त का उल्लेख मिलता है, तब यह गौतमीयतन्त्र का कैसे कहा जा सकता है।

❀ शापोद्धार ❀

कुछ पुस्तकों में उपोद्घात व न्यास ध्यान के पश्चात् मूल पाठारम्भ से पूर्व निम्नलिखितानुसार शापोद्धार भी लिखा है यथा—

"अस्य श्रीगोपालसहस्रनामशापविमोचनमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः पंक्तिश्छन्दः श्रीगोपालो देवता सदाशिववाक्य–शाप–विमुक्त्यर्थं जपे विनियोगः" ।

ऋष्यादि न्यासं कृत्वा, ॐ ऐं । क्लीं । ह्रीं । श्रीं । वामदेवाय नमः । स्वाहा । इति करहृदयादि षडङ्गं विधाय—

ध्यायेद् देवं गुणातीतं पीतकौशेय––वाससम् ।
प्रसन्नं चारुवदनं निर्गुणं श्रीपतिं प्रभुम् ॥

इति ध्यात्वा 'ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं वामदेवाय नमः स्वाहा' इति मन्त्रमष्टोत्तरशतं जप्त्वा स्तोत्रं पठेत् ।

यह गौतमीयतन्त्र प्रोक्त है । कहीं-कहीं इसका उत्कीलन भी निम्नलिखितानुसार प्राप्त होता है—

"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं स्फुटं सहस्रनाम उत्कीलय उत्कीलय स्वाहा ।" सप्तवारं जपेत् ।

महात्मा गोपालदासजी ने शाप प्रकरण को आश्चर्यजनक माना है । संस्कृत टीका के हिन्दी अनुवाद की प्रस्तावना में आपने लिखा है—

"शापा-शापी प्रकरण भी एक आश्चर्यजनक बात है। गायत्री मन्त्र, गोपाल-सहस्रनाम जैसी जगत्पावन वस्तुओं को भी शाप लगता हो–जो कि जगत् के पाप, ताप, शाप को हटाने का सामर्थ्य रखते हैं--तो फिर इन शाप-प्रेमियों से बचेगा कौन ? ऐसी भगवद्विभूति रूप, परम निःश्रेयस्कर वस्तुओं को भी शाप देने का जिन्होंने साहस किया, उन्हीं को पलट कर उनके शाप लग जावें—यही हमारी भगवान् से प्रार्थना है। यही इस सहस्रनाम का समुचित शापोद्धारकारण है।"

वास्तव में इसका प्राचीन पाठक्रम विलुप्त हो जाने के कारण अर्वाचीन प्रकाशनों में शापोद्धार प्रकरण का समावेश होने लगा है। इस अनुसन्धान में पं० श्रीरामकल्याणश्री (सामरेट वाले) एवं अन्य कतिपय वयोवृद्ध महानुभावों से जानकारी करने पर अनुश्रुति प्रमाण से यह ज्ञात हुआ कि उपोद्घात के पश्चात् गोपालमन्त्र के न्यास, ध्यान आदि विधिपूर्वक अष्टोत्तरशत जप करके सहस्रनाम का न्यास-ध्यान करना चाहिये। फिर पाठ प्रारम्भ करें। इसमें किसी भी प्रकार के शापौद्धार की आवश्यकता नहीं है। कतिपय प्रकाशित पुस्तकों में भी गोपालमन्त्र के न्यासादि पृथक् से दिये गये हैं—यह भी पूर्वोक्त अनुश्रुति प्रमाण से उपलब्ध पाठक्रम का ही उपोद्बलक है। उक्त तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत सम्पादन में केवल गोपालमन्त्र की ही न्यास-ध्यान पूर्वक जपविधि दी है। शापोद्धार का कोई उल्लेख नहीं किया है।

यद्यपि गोपालसहस्रनाम का पाठ अदीक्षित अथवा अन्य सम्प्रदायों में दीक्षित वैष्णव व स्मार्त आदि भी करते हैं, किन्तु पाठ की विधि एवं क्रम में इससे कोई अन्तर नहीं होता। उपासना के क्षेत्र में जिस अनुष्ठान का जो विधान है, उसे उसी क्रम से करना उचित है।

जिस तन्त्र का यह सहस्रनाम है, उसी संमोहनतन्त्र के विधान से गोपाल मन्त्र की जप विधि दी गई है। यथोक्तं संमोहनतन्त्रे—

ऋषिर्नारद इत्युक्तो गायत्री छन्द उच्यते। गोपवेषधरः कृष्णो देवता परिकीर्तितः॥
बीजं मन्मथसञ्ज्ञ तु प्रिया शक्तिर्हविर्भुजः। योगमाया महेशानी ह्यस्याधिष्ठातृदेवता॥
चतुर्वर्ग-फलावाप्तौ विनियोगः प्रकीर्तितः॥

(स्वधर्मामृत सिन्धु पृ. सं. १०३)

❀ श्रीगोपालसहस्रनाम पाठ विधि ❀

पाठ का विनियोग सभी पुस्तकों में समान रूप से लिखा है—"श्रीकृष्णचन्द्र भक्तिरूपफल प्राप्तये श्रीगोपालसहस्रनाम जपे पाठे वा विनियोगः" के आगे "अथवा ॐ ऐं क्लीं बीजं, ॐ ह्रीं श्रीं शक्तिः, श्रीवृन्दावन-निवासः कीलकं, श्रीराधाप्रियंब्रह्मेति मन्त्रः, धर्मादिचतुर्विधपुरुषार्थ सिद्ध्यर्थे जपे पाठे वा विनियोगः" यह एक और विनियोग

लिखा है। अधिकांश व्यक्ति इन दोनों ही विनियोगों को एक साथ बोल लेते हैं। यह उचित नहीं है। अतः निष्काम भावना से पाठ करने वाले तथा सकाम भावना से प्रयोग करने वाले व्यक्तियों के लिए विनियोग व ऋष्यादिन्यास पृथक्-पृथक् छाँटकर लिख दिये हैं। कर हृदयादि न्यास दोनों क्रम में समान होने से एक साथ दे दिये हैं।

❁ पाठारम्भ का क्रम ❁

प्रायः पाठारम्भ के भिन्न-भिन्न क्रम मिलते हैं। संस्कृत टीका वाली सभी प्रतियों में मूल पाठ "श्रीगोपालो महीपालो वेद-वेदाङ्ग-पारगः।" से प्रारम्भ किया है। इसके सम्बन्ध में महात्मा गोपालदासजी ने अधिक छानबीन नहीं की। आपने लिखा है— "हमने तो विद्वान् टीकाकार के पाठ को ही प्रामाणिक मानकर मुद्रित कराया है।"

इसके अतिरिक्त मथुरा, बम्बई व देहली से प्रकाशित पुस्तकों में पाठ का प्रारम्भ—"ॐ क्लीं श्रीदेवः कामदेवः कामबीज-शिरोमणिः" से किया है तथा अन्य पुस्तकों में "ॐ क्लीं देवः कामदेवः कामबीज-शिरोमणिः" इस पंक्ति से पाठ का श्रीगणेश किया है।

प्रस्तुत पुस्तक में कौन-सा क्रम रखा जाये इसके निर्णय की दिशा में विविध पाठक्रम की उपलब्धि ने एक समस्या उत्पन्न कर दी है। क्या यह अनेक रूपता कामना भेद से हो गई है अथवा देश भेद से हो गई है—यह विचारणीय है। परम्परा से प्राप्त

क्रम का ही अधिक महत्त्व समझा जाता है। मनमानी कल्पना कर लेना उचित नहीं है।

इस सम्बन्ध में पूज्यपाद वयोवृद्ध व अनुभववृद्ध गुरुवर्य्य पं० श्रीजगदीशजी सा. आ. (सेवानिवृत्त साहित्य विभागाध्यक्ष म. सं. का. जयपुर) एवं पं० श्रीरामचन्द्रजी सा. आ. (सेवा निवृत्त साहित्य प्राध्यापक म. सं. का. जयपुर) से मार्ग-दर्शन की प्रार्थना की। आपने सत्परामर्श देते हुए कहा—"गोपाल की उपासना का मूल क्षेत्र व्रजमण्डल (मथुरा - वृन्दावन) है, अतः इस क्षेत्र में जो पाठ परम्परा हो, उसे प्रामाणिक समझना चाहिये"।

डॉ. श्रीरामनारायणजी चतुर्वेदी का भी परामर्श यथासाध्य पाठ को व्रजक्षेत्रीय प्राचीन परम्परा को ही सुरक्षित रखने के पक्ष में रहा।

उक्त निर्णय के अनुसार श्रीवृन्दावनधाम की पाठ परम्परा का अनुसन्धान करते हुए मैंने जिन - जिन से सम्पर्क किया, अधिकांश उनके पास मथुरा से प्रकाशित पुस्तकें थीं और वे "ॐ क्लीं श्रीदेवः कामदेवः" से ही पाठारम्भ करते थे। उधर राजस्थान में प्रायः "ॐ क्लीं देवः कामदेवः" से प्रारम्भ करते हैं। इसमें प्रणव की गणना करनी होती है, क्योंकि इसके बिना प्रथम पाद में सात ही अक्षर रह जाते हैं। व्रज-मण्डल की परम्परा में प्रणव गणना में नहीं आता, क्योंकि इसमें "क्लीं श्रीदेवः" से अक्षर पूर्ति हो जाती है। सम्भवतः उक्त परम्परा में बीजाक्षर से पाठारम्भ पर अधिक बल दिया

होगा। प्रणव को केवल मङ्गल के रूप में लगाया होगा। इसी प्रकार प्रस्तुत पुस्तक में भी प्रणव को केवल मङ्गल-रूप मानकर 'क्लीं श्रीदेवः कामदेवः" से ही पाठारम्भ का क्रम रखा गया है।

❀ मूल-पाठ ❀

मूल पाठ में संस्कृत टीका वाली पुस्तक को प्रधानता दी है। केवल पाठारम्भ के प्रचलित क्रम का समावेश विशेष रूप से कर दिया गया है। इससे १–क्लीं श्रीदेवः २–कामदेवः ३-कामबीज–शिरोमणिः ये तीन नाम बढ़े हैं। इनकी पूर्ति माईथान आगरा से प्रकाशित गोपालार्चनसृति की नामावली के आधार पर निम्नलिखितानुसार हो जाती है—

किशनगढ़ से प्रकाशित–	आगरा से प्रकाशित–
श्लोक सं. ६०–मोहिनी मोहनः (दो नाम)	मोहिनी-मोहनः (समस्त पद एक नाम)
श्लोक सं. ८४–चिन्तामणिः प्रभुः (दो नाम)	चिन्तामणिप्रभुः (समस्त एक नाम)
श्लोक सं. १००–अप्रमेयः प्रभुः (दो नाम)	अप्रमेय-प्रभुः (समस्त एक नाम)

इस प्रकार पाठारम्भ के तीनों नामों का इसी में समावेश हो जाता है। संख्या की वृद्धि नहीं होती।

संस्कृत टीका की श्लोक संख्या १ में "कृष्णः कमलपत्राक्षः" के स्थान पर

मूलपाठ में "धरणीपालको धन्यः" को प्रचलित परम्परा के अनुसार रखा है। इससे गणना में कोई अन्तर नहीं पड़ता तथा आगे श्लोक सं. ७३ (संस्कृत टीका) में "कृष्णः कमलपत्राक्षः" नाम भी आ जाते हैं। शेष सभी नामों में संस्कृत टीका के आधार पर मूल-पाठ माना है, अन्य विभिन्न पुस्तकों में आये पाठ-भेद को नीचे टिप्पणी में लिख दिया।

❀ नामावली, कवच आदि ❀

तुलसी दलार्पण आदि उपासना के विभिन्न पूजाक्रम की सुविधा के लिये मूलपाठ के आधार पर नामावली का भी संकलन कर दिया गया है। प्रारम्भ में त्रैलोक्य मङ्गल कवच, श्रीगोपालस्तवराज एवं अन्त में श्रीगोपालकवच, श्रीराधाकवच, श्रीराधा-मन्त्र जपविधि श्रीमहालक्ष्म्यष्टक और श्रीगोपालषोडशनाम भी दे दिये हैं।

त्रैलोक्यमङ्गल-कवच की अनेक प्रतियाँ देखीं। अधिकांश त्रुटिपूर्ण थीं। एतदर्थ जयपुर राजकीय पोथीखाना स्तोत्र नं० ४६२ हस्तलिखित प्रति तथा चौखम्भा स्तोत्र ग्रन्थमाला २९ का वृहत्स्तोत्र रत्नाकर पृ० सं० ७२-७५ में प्रकाशित कवच से इसके शोधन में पर्याप्त सहायता प्राप्त हुई।

वास्तव में तो पूज्यपाद अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य पीठाधिपति श्री "श्रीजी" महाराज की ही असीम अनुकम्पा का यह प्रसाद है। इसके

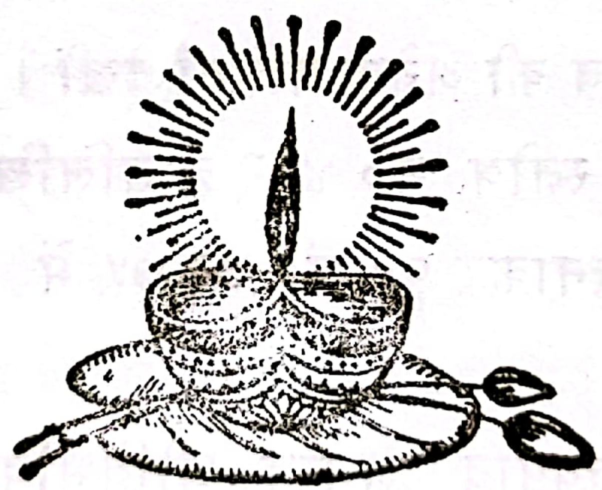
सम्पादन कार्य में जिन महानुभावों ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मेरा सहयोग किया है उनका मैं आभार मानता हूँ। पूर्णतया सावधानी रखते हुये भी ',गच्छत: स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादत:" के अनुसार कोई स्खलन हो गया हो तो तदर्थ क्षमा प्रार्थी हूँ। इसके अधिकाधिक सदुपयोग में ही मेरे परिश्रम की सफलता है। शमिति—

विनीत—

रामगोपाल शास्त्री

शिक्षा मन्त्री—अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)



* अनुक्रमणिका *

卐



❀ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ❀

❀ श्रीभगवन्निम्बार्कमहामुनीन्द्राय नमः ❀

अथ त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कवचम्

पुलस्त्य उवाच[१] —

भगवन्सर्वधर्मज्ञ कवचं यत्प्रकाशितम् ।
त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कृपया कथय प्रभो ॥१॥

सनत्कुमार उवाच—

शृणु वक्ष्यामि विप्रेन्द्र कवचं परमाद्भुतम् ।
नारायणेन कथितं कृपया ब्राह्मणे पुरा ॥२॥

१—नारद उवाच ।

ब्रह्मणा कथितं मह्यं परं स्नेहाद्ददामि ते ।
अतिगुह्यतमं[1] तत्त्वं ब्रह्ममन्त्रौघविग्रहम् ॥३॥
यद्धृत्वा पठनाद् ब्रह्मा सृष्टिं वितनुते ध्रुवम् ।
यद्धृत्वा पठनात्पाति महालक्ष्मीर्जगत्त्रयम् ॥४॥
पठनाद्धारणाच्छंभुः संहर्ता सर्वतत्त्व[2] वित् ।
त्रैलोक्यजननी दुर्गा महिषादिमहासुरान् ॥५॥
वरदृप्तान् जघानैव पठनाद्धारणाद्यतः ।
एवमिन्द्रादयः सर्वे [3]सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः ॥६॥
इदं कवचमत्यन्तगुप्तं कुत्रापि नो वदेत् ।
शिष्याय [4]विष्णुभक्ताय साधकाय प्रकाशयेत् ॥७॥
शठाय परशिष्याय दत्वा[5] मृत्युमवाप्नुयात् ।
त्रैलोक्यमङ्गलस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः ॥८॥

१–तरं, २–मन्त्र, ३–परमैश्वर्यमाप्नुयुः, ४–भक्तियुक्ताय, ५–दद्यात् ।

ऋषिश्छंदस्तु[1] गायत्री देवो नारायणः स्वयम् ।
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥९॥
प्रणवो मे शिरः पातु नमो नारायणाय च ।
भालं पायान्नेत्र-युग्मंमष्टार्णो भुक्तिमुक्तिदः ॥१०॥
क्लीं पायाच्छ्रोत्रयुग्मं चैकाक्षरः सर्वमोहनः ।
क्लीं कृष्णाय सदा घ्राणे[2] गोविंदायेति जिह्विकाम् ॥११॥
गोपीजनपदं वल्लभाय स्वाहाननं मम ।
अष्टादशाक्षरो मन्त्रः कण्ठं पातु दशाक्षरः ॥१२॥
क्लीं ग्लौं क्लीं श्यामलाङ्गाय नमः स्कंधौ दशाक्षरः ।
गोपीजनपदं वल्लभाय स्वाहा भुजद्वयम् ॥१३॥
क्लीं कृष्णाय करौ पातु[3] क्लीं कृष्णायां[4] गजोऽवतु ।

१—श्च, २—घ्राणम्, ३—पायात्, ४—'हृदं मम' इति, अङ्गतोऽवतु इति च ।

हृदयं[१] भुवनेशानः क्लीं कृष्णाय[२] स्तनौ[३] मम ॥१४॥
गोपालायाग्निजाया[४] मे, कुक्षियुग्मं सदाऽवतु ।
क्लीं कृष्णाय सदा पातु पार्श्वयुग्मं मनूत्तमः ॥१५॥
कृष्णगोविन्दकौ पातां स्मराद्यौ ङेयुतौ मनः[५] ।
अष्टाक्षरः[६] पातु नाभिं, कृष्णेति द्वयक्षरोऽवतु ॥१६॥
पृष्ठं क्लीं कृष्ण कंकालं[७] क्लीं कृष्णायद्विठांतकः ।
सक्थिनी सततं पातु, श्रींह्रींक्लीं कृष्णठद्वयम् ॥१७॥
ऊरु सप्ताक्षरः पातु[८] त्रयोदशाक्षरोऽवतु ।
श्रींह्रींक्लीं पदतो गोपीजनवल्लपदं ततः ॥१८॥
भायस्वाहेति पायुं वै, क्लींह्रींश्रीं च दशाक्षरः[९] ।
जानुनी च सदा पातु, ह्रींश्रींक्लीं च दशाक्षरः ॥१९॥

१–श्रीं मतिं भुवनेशाय इति, हृदय श्री भुवनेशी इति च, २–कृष्णः क्लीं, ३–मम स्तनौ, ४–यान्तं, ५–मनू, ६–नाभिमष्टाक्षरः पातु, ७–कृष्णकं गल्लं, ८–पायात्, ९–दशार्णक ।

त्रयोदशाक्षरः पातु, जंघे चक्रगदायुधः[1] ।
श्रीमन्मुकुन्दचरणौ, सदा शरणमहं प्रपद्ये ॥२०॥
इति शरणमन्त्रस्तु, पादौ पायात्सदा मम ।
अष्टादशाक्षरो ह्लीं श्रीं पूर्वको विंशवर्णकः ॥२१॥
सर्वाङ्गं मे सदा पातु द्वारकानायको वली ।
नमो भगवते पश्चाद्वासुदेवाय तत्परम् ॥२२॥
ताराद्यो द्वादशार्णोऽयं, प्राच्यां मां सर्वदावतु ।
श्रींह्लींक्लींदशवर्णकः क्लींह्लींश्रींषोडशाक्षरः ॥२३॥
गदाद्युदायुधो विष्णुः [2]स मेऽग्निदिशि रक्षतु ।
ह्लीं श्रींदशाक्षरो मन्त्रो, दक्षिणे मां सदावतु ॥२४॥
तारा नमो भगवते, रुक्मिणी—वल्लभाय च ।
स्वाहेति षोडशार्णोऽयं नैर्ऋत्यां दिशि रक्षतु ॥२५॥

१—चक्राद्युदायुधः, २-मामग्नेर्दिशि ।

क्लीं[1] हृषीकेशायपदं, नमो मां वारुणेऽवतु ।
अष्टदशार्णः कामांतो, वायव्ये मां सदावतु ॥२६॥
श्रीं मायाकामकृष्णाय, गोविन्दाय द्विठो मनुः ।
द्वादशार्णात्मको विष्णुरुत्तरे मां सदावतु ॥२७॥
वाग्भवः[2] कामकृष्णाय, ह्रीं गोविन्दाय तत्परम् ।
श्रींगोपीजनवल्लान्ते भाय[3] स्वाहा करौ ततः ॥२८॥
द्वाविंशदक्षरो मन्त्रो मामैशान्ये[4] सदाऽवतु ।
कालियस्य फणामध्ये, दिव्यं नृत्यं करोति तम् ॥२९॥
नमामि देवकीपुत्रं नृत्यराजानमच्युतम् ।
द्वात्रिंशदक्षरो मन्त्रो ऽप्यधो मां सर्वदाऽवतु[5] ॥३०॥

१–वारुण्यां क्लीं हृषीकेशाः, २–भगवान्, ३–गोपीजनमनोवल्लभाय स्वाहा नमोऽस्तुते, ४–ईशान्याम्, ५–'सर्वदाऽवतु' इत्यस्याग्रे 'कूटत्रयं तुर्ययुक्तं मूर्द्धिन पातु सदा मम । अष्टार्णः पातु सर्वांगे पातु गोपाल सुन्दरः ॥ ॐ क्लीं ह्रीं' इत्यधिकम् ।

क्लीं[1] कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय धीमहि ।
तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयात्, एषा मां पातु चोर्ध्वतः ॥३१॥
इति ते कथितं विप्र, सर्व[2] मन्त्रौघविग्रहम् ।
त्रैलोक्यमङ्गलं नाम, कवचं ब्रह्मरूपिणम्[3] ॥३२॥
ब्रह्मेशप्रमुखाधीश[4] — नारायणमुखाच्छ्रुतम् ।
तत्र स्नेहान्मया ख्यातं, प्रवक्तव्यं न कस्यचित् ॥३३॥
गुरुं प्रणम्य[5] विधिवत्कवचं प्रपठेत्तु यः ।
सुकृद्द्विस्त्रियथाज्ञानं सोऽपि[6] सर्वतपोमयः ॥३४॥
मन्त्रेषु सकलेष्वेव देशिको नात्र संशयः[7] ।
शतमष्टोत्तरं चापि, पुरश्चर्याविधिः स्मृतः ॥३५॥
हवनादि[8] दशांशेन, कृत्वा तत्साधयेद्ध्रुवम् ।

१–'क्लीं' इति नास्ति, २–ब्रह्म, ३–रूपकम्, ४–ब्रह्मणा कथितं पूर्वं, ५–अभ्यर्च्य, ६–स हि, ७–इत्यर्द्धंनास्ति, ८–दीन् ।

यदि स्यादिसद्धकवचो [1]विष्णुरेव भवेत् स्वयम् ॥३६॥
मन्त्रसिद्धिर्भवेत्तस्य, पुरश्चर्यां[2] विना ततः ।
स्पर्धामुद्धूय सततं लक्ष्मीर्वाणीवसेत्ततः ॥३७॥
पुष्पांजल्यष्टकं दत्वा, मूलेनैव पठेत्सकृत् ।
दशवर्षसहस्राणां[3] पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥३८॥
भूर्जे विलिख्य[4] गुटिकां, स्वर्णस्थां धारयेद्यदि ।
[5]गोरोचनाकुंकुमाभ्यां, कस्तूरीरक्तकैः पुनः ॥३९॥
कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ, सोऽपि विष्णुर्न संशयः ।
[6]पठनाद्धारणात्सर्वा, पृथ्वी मधुपुरी समा ॥४०॥
यत्र तत्र विपन्नोपि, मथुरायां मृतो भवेत् ।
अश्वमेधसहस्राणि, वाजपेयशतानि च ॥४१॥

१–सिद्धिरेव न संशयः, २–र्या विधानतः, ३–मुखे, ४–णि, ५–खब्राङ्गुलिकां, ६–इत्यर्द्धंनास्ति, ७–इति श्लोको नास्ति ।

महादानानि यान्येव, प्रादक्षिणय भुवस्तथा ।
कलां नार्हंति तान्येव, सकृदुच्चारणाद्यतः[१] ।४२॥
कवचस्य प्रसादेन, सायुज्यं[२] लभते नरः ।
त्रैलोक्यं मोक्षयेदेव[३], त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥४३॥
इदं कवचमज्ञात्वा. भजेद्यः पुरुषोत्तमम् ।
शतलक्षं प्रजप्तोऽपि, न मन्त्रः सिद्धिदायकः[४] ॥४४॥

❀ इति श्रीसनत्कुमारतन्त्रे त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कवचं समाप्तम् ❀



१–ततः, २–जीवन्मुक्तो भवेन्नरः, ३–क्षोभयत्येव, ४–तस्य सिद्ध्यति ।

* अथ श्रीगोपालस्तवराजः *

ॐ अस्य श्रीगोपालस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीनारदऋषिः अनुष्टुप्छन्दः
श्रीकृष्णः परमात्मा देवता श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

अथ ध्यानम्—

सजल–जलद–नीलं दर्शितोदार–शीलं
कर–तल–धृत–शैलं वेणु–वाद्ये रसालम् ।
व्रज–जन–कुल–पालं कामिनी–केलि–लोलं
तरुणतुलसि–मालं नौमि गोपालबालम् ॥

नारद उवाच—

नवीन–नीरद–श्यामं नीलेन्दीवर–लोचनम् ।
[१]वल्लवी–नन्दनं वन्दे कृष्णं गोपालरूपिणम् ॥१॥
स्फुरद्बर्ह – दलोद्बद्ध–नील – [२]कुन्तल–मण्डितम् ।
कदम्ब – कुसुमोद्भासि – वनमाला – विभूषितम् ॥२॥

१–देवकी, २–कुञ्चितमूर्धजम् ।

गण्ड - मण्डल - संसर्गि - चलत्काञ्चन - कुण्डलम् ।
स्थूल - मुक्ता - फलोदार - हारोद्योतित - वक्षसम् ॥३॥
हेमाङ्गद - तुला - कोटि - किरीटोज्ज्वल - विग्रहम् ।
मन्द - मारुत - संक्षोभि - वलिताम्बर - सञ्चयम् ॥४॥
रुचिरोष्ठ - पुट - न्यस्त - वंशी - मधुर - निःस्वनैः ।
लसद्गोपालिका-चेतो मोहयन्तं मुहुर्मुहुः ।५॥
वल्लवी - वदनाम्भोज - मधुपान - मधुव्रतम् ।
क्षोभयन्तं मनस्तासां सस्मेरापाङ्गवीक्षणैः ॥६॥
यौवनोद्भिन्न - देहाभिः संसक्ताभिः परस्परम् ।
विचित्राम्बरभूषाभिर्गोपनारीभिरावृतम् ॥७॥
प्रभिन्नाञ्जन - कालिन्दी - जलकेलि - कलोत्सुकम् ।
[1]योधयन्तं क्वचिद् गोपान् व्याहरन्तं गवाङ्गणम् ॥८॥

१–वोधयन्ततं ।

कालिन्दी - जल - संसर्गि - शीतलानिल - कंपिते ।
कदम्ब - पादप - च्छाये स्थितं वृन्दावने क्वचित् ॥९॥
रत्न - भूधर - संलग्न - रत्नासन - परिग्रहम् ।
कल्प - पादप - मध्यस्थं हेममण्डपिकागतम् ॥१०॥
वसन्त-कुसुमामोद-सुरभीकृत-दिङ मुखे ।
गोवर्द्धन - गिरौ रम्ये स्थितं रासरसोत्सुकम् ॥११॥
सव्य - हस्त - तले न्यस्तगिरिवर्यातपत्रकम् ।
खण्डिताखण्डलोन्मुक्त - मुक्तासार - घनाघनम् ॥१२॥
वेणु - वाद्य - महोल्लास - कृत- हुङ्कार - निःस्वनैः ।
सवत्सैरुन्मुखैः शश्वद् गोकुलैरभिवीक्षितम् ॥१३॥
कृष्णमेवानुगायद्भिस्तच्चेष्टा - वश - वर्तिभिः ।
दण्ड - पाशोद्यत - करैर्गोपालैरुपशोभितम् ॥१४॥

नारदाद्यैर्मुनि - श्रेष्ठैर्वेद - वेदाङ्ग—पारगैः ।
प्रीति - सुस्निग्धया वाचा स्तूयमानं परात्परम् ॥१५॥

य एवं चिन्तयेद्देवं भक्त्या संस्तौति मानवः ।
त्रिसन्ध्यं तस्य तुष्टोऽसौ ददाति वरमीप्सितम् ॥१६॥

राज—वल्लभतामेति भवेत्सर्व—जन—प्रियः ।
अचलां श्रियमाप्नोति स वाग्मी जायते ध्रुवम् ॥१७॥

इति श्रीनारदपञ्चरात्रे ज्ञानामृतसारे चतुर्थरात्रे
श्रीगोपालस्तवराजः सम्पूर्णः ।



* अथ श्रीगोपालसहस्रनाम स्तोत्रम् *

पार्वत्युवाच—

कैलासशिखरे रम्ये गौरी पृच्छति शङ्करम् ।
ब्रह्माण्डाखिलनाथस्त्वं सृष्टिसंहारकारकः ॥१॥
त्वमेव पूज्यसे लोकैर्ब्रह्मविष्णुरादिभिः ।
नित्यं पठसि देवेश कस्य स्तोत्रं महेश्वर ! ॥२॥
आश्चर्यमिदमत्यन्तं जायते [1]मयि शङ्कर ।
तत्प्राणेश महाप्राज्ञ संशयं छिन्धि [2]मे प्रभो ॥३॥

श्रीमहादेव उवाच—

धन्यासि कृतपुण्यासि पार्वति प्राणवल्लभे ।
रहस्यातिरहस्यं च यत्पृच्छसि वरानने ॥४॥

१-मम, २-शंकर ।

स्त्रीस्वभावान्महादेवि पुनस्त्वं परिपृच्छसि ।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥५॥
दत्ते च सिद्धिहानिः स्यात्तस्माद्यत्नेन गोपयेत् ।
इदं रहस्यं परमं पुरुषार्थप्रदायकम् ॥६॥
धनरत्नौघ—माणिक्य—तुरङ्गम—गजादिकम् ।
ददाति स्मरणादेव महामोक्ष—प्रदायकम् ॥७॥
तत्तेऽहं सम्प्रवक्ष्यामि शृणुष्वावहिता प्रिये ।
योऽसौ निरञ्जनो देवश्चित्स्वरूपी जनार्दनः ॥८॥
संसार—सागरोत्तार—कारणाय सदा नृणाम् ।
श्रीगङ्गाद्रव[1] —रूपेण त्रैलोक्यं व्याप्य तिष्ठति ॥९॥
ततो लोका महामूढा विष्णु—भक्तिविवर्जिताः ।
निश्चयं नाधिगच्छन्ति पुनर्नारायणो हरिः ॥१०॥

१–रङ्गादिक,

निरञ्जनो निराकारो भक्तानां प्रीति-[1]कारकः ।
वृन्दावनविहाराय गोपालं रूपमुद्वहन् ॥११॥
मुरलीवादनाधारी राधायै प्रीतिमावहन् ।
अंशांशेभ्यः समुन्मील्य पूर्णरूपः कलायुतः ॥१२॥
श्रीकृष्णचन्द्रो भगवान्नन्दगोपवरोद्यतः ।
धरणीरूपिणी—मातृ[2] — यशोदानन्ददायकः[3] ॥१३॥
द्वाभ्यां प्रयाचितो नाथो देवक्यां वसुदेवतः ।
ब्रह्मणा[4]ऽभ्यर्थितो देवो देवैरपि सुरेश्वरि ॥१४॥
जातोऽवन्यां[5] मुकुन्दोऽपि मुरली वेदरेचिका ।
तया सार्द्धं वचः कृत्वा ततो जातो महीतले ॥१५॥
संसारसारसर्वस्वं श्यामलं महदुज्ज्वलम् ।
एतज्ज्योतिरहं वन्द्य[6] चिन्तयामि सनातनम् ॥१६॥

१–कामदः, २–माता, ३–यिनी, ४–प्रार्थितो, ५–ऽवन्याऽपि च नुतो, ६–वेद्यं ।

गौरतेजो विना यस्तु श्यामतेजः समर्चयेत् ।
जपेद्वा ध्यायते वापि स भवेत्पातकी शिवे ॥१७॥
स ब्रह्महा सुरापी च स्वर्णस्तेयी च पञ्चमः ।
एतैर्दोषैर्विलिप्येत तेजोभेदान्महेश्वरि ॥१८॥
यस्माज्ज्योतिरभूद्द्वेधा राधामाधवरूपकम् ।
तस्मादिदं महादेवि गोपालेनैव भाषितम् ॥१९॥
दुर्वाससो मुनेर्मोहे कार्त्तिक्यां रासमण्डले ।
ततः पृष्टवती राधा सन्देहं भेदमात्मनः ॥२०॥
निरञ्जनात्समुत्पन्नं मयाऽधीतं जगन्मयि ।
श्रीकृष्णेन ततः प्रोक्तं राधायै नारदाय च ॥२१॥
ततो नारदतः सर्वे विरला वैष्णवा जनाः ।
कलौ जानन्ति देवेशि गोपनीयं प्रयत्नतः ॥२२॥

शठाय कृपणायाथ दाम्भिकाय सुरेश्वरि ।
ब्रह्महत्यामवाप्नोति तस्माद्यत्नेन गोपयेत् ॥२३॥

卐

* अथ श्रीगोपालमन्त्र-जप-विधिः *

ॐ अस्याष्टादशाक्षर–श्रीगोपालमन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिर्गायत्री छन्दः श्रीगोपालो देवता कामो बीज स्वाहा शक्तिः योगमाया कीलकं श्रीराधागोपाल प्रीत्यर्थे (चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध् यर्थे) जपे विनियोगः ।

श्रीनारदर्षये नमः शिरसि । गायत्री छन्दसे नमो मुखे । श्रीगोपालाय देवतायै नमो हृदये । क्लीं बीजाय नमो गुह्ये । स्वाहा शक्तये नमः पादयोः । ह्रीं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

क्लीं अगुष्ठाभ्यां नमः । कृष्णाय तर्जनीभ्यां नमः । गोविन्दाय मध्यमाभ्यां नमः । गोपीजन अनामिकाभ्यां नमः । वल्लभाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः । स्वाहा करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः ।

क्लीं हृदयाय नमः । कृष्णाय शिरसे स्वाहा । गोविन्दाय शिखायै बषट् । गोपीजन

कवचाय हुम् । वल्लभाय नेत्रत्रयाय वौषट् । स्वाहा अस्त्राय फट् ।

क्लीं नमो मूर्द्धनि । कृष्णाय नमो वक्त्रे । गोविन्दाय नमो हृदये । गोपीजन-वल्लभाय नमो नाभौ । स्वाहा नमः पादयोः ।

क्लीं नमो ब्रह्मरन्ध्रे (शिरसि) कृं नमो ललाटे । ष्णां नमो भ्रुवोर्मध्ये । यं नमो दक्षिणे कर्णे । गों नमो वाम-कर्णे । विं नमो दक्षिण नेत्रे । दां नमो वाम नेत्रे । यं नमो दक्षिण-नासापुटे । गों नमो वामनासापुटे । पीं नमो वदने । जं नमः कण्ठे । नं नमो हृदि । वं नमो नाभौ । ल्लं नमो दक्षिण कट्याम् । भां नमो वामकट्याम् । यं नमो मूले (गुह्ये) । स्वां नमो जानुनोः । हां नमः पादयोः ।

मूलेन त्रिर्व्यापकं कृत्वा ध्यायेत्—

स्वभावतोऽपास्त-समस्त-दोषमशेष-कल्याण-गुणैकराशिम् ।
व्यूहाङ्गिनं ब्रह्म परं वरेण्यं ध्यायेम कृष्णं कमलेक्षणं हरिम् ।।१।।
अङ्के तु वामे वृषभानुजां मुदा विराजमानामनुरूप-सौभगाम् ।
सखी-सहस्रैः परिसेवितां सदा स्मरेम देवीं सकलेष्ट-कामदाम् ।।२।।

इति ध्यात्वा—'क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन-वल्लभाय स्वाहा''—इति मन्त्रमष्टोत्तरशतं जपेत् ।

अथ श्रीगोपाल–सहस्रनाम–पाठ–विधि

निष्काम भावना से केवल भक्तिरूप फल प्राप्ति के लिये पाठ करने वाले नीचे लिखा विनियोग व ऋष्यादि न्यास करे–

ॐ अस्य श्रीगोपाल - सहस्रनाम - स्तोत्र - मन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः श्रीगोपालो देवता, कामो बीजं माया शक्तिश्चन्द्रः कीलकं श्रीराधाकृष्णचन्द्र - भक्तिजन्य-फल-प्राप्तये श्रीगोपालसहस्रनामपाठे (जपे हवने वा) विनियोगः ।

नारदर्षये नमः शिरसि । अनुष्टुप् छन्दसे नमो मुखे । श्रीगोपालाय देवतायै नमो हृदये । कामबीजाय नमो गुह्ये । माया-शक्तये नमः पादयोः । चन्द्र कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

कामना-विशेष से पाठ करने वाले नीचे लिखा विनियोग व ऋष्यादि न्यास करें—

ॐ अस्य श्रीगोपालसहस्रनाम - स्तोत्र - मन्त्रस्य नारद ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीगोपालो देवता ॐ ऐं क्लीं बीजं ॐ श्रीं ह्रीं शक्तिः श्रीवृन्दावन - निवासः कीलकम्, श्रीराधाप्रियं परब्रह्मेति मन्त्रः धर्मादि - चतुर्विध - पुरुषार्थ - सिद्ध्यर्थे पाठे (जपे हवने वा) विनियोगः ।

नारदर्षये नमः शिरसि । अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे । श्रीगोपालाय देवतायै नमो हृदये । ॐ ऐं क्लीं बीजाय नमो गुह्ये । ॐ श्रीं ह्रीं शक्तये नमः पादयोः । श्रीवृन्दावन-निवासः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

करन्यास व हृदयादिन्यास उक्त दोनों प्रकारों के लिए समान हैं। ये बीजाक्षर से किये जाते हैं, अतः निम्नलिखितानुसार करें।

ॐ क्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ क्लूं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ क्लैं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ क्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ क्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

ॐ क्लां हृदयाय नमः । ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा । ॐ क्लूं शिखायै वषट् । ॐ क्लैं कवचाय हुम् । ॐ क्लौं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ क्लः अस्त्राय फट् ।

ॐ नमो भगवते नन्दपुत्राय आनन्दवपुषे गोपीजनवल्लभाय स्वाहा ।

❀ अथ ध्यानम् ❀

कस्तूरी - तिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभं
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम् ।।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूड़ामणिः ।।१।।
फुल्लेन्दीवर—कान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियं
श्रीवत्साङ्कमुदार—कौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम् ।।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गो–गोपसङ्घावृतं
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्याङ्गभूषं भजे ।।२।।

* अथ श्रीगोपालसहस्रनाम *

❀ ॐ ❀

क्लीं श्रीदेवः कामदेवः कामबीज - शिरोमणिः ।
श्रीगोपालो महीपालः [१]वेदवेदाङ्गपारगः ॥१॥
[२]धरणीपालको धन्यः पुण्डरीकः सनातनः ।
गोपतिर्भूपतिः शास्ता प्रहर्त्ता विश्वतोमुखः ॥२॥
आदिकर्त्ता महाकर्त्ता महाकालः प्रतापवान् ।
जगज्जीवो जगद्धाता जगद्भर्त्ता जगद्वसुः ॥३॥
मत्स्यो भीमः कुहूभर्त्ता हर्त्ता वाराहमूर्तिमान् ।
नारायणो हृषीकेशो गोविन्दो गरुडध्वजः ॥४॥

१–सर्व, २–कृष्णः कमलपत्राक्षः ।

गोकुलेन्द्रो महीचन्द्रः शर्वरीप्रियकारकः ।
कमलामुखलोलाक्षः पुण्डरीकः शुभावहः ॥५॥

[१]दूर्वाशाः कपिलो भौमः सिन्धुसागरसङ्गमः ।
गोविन्दो गोपतिर्गोत्रः कालिन्दी-प्रेमपूरकः ॥६॥

[२]गोस्वामी गोकुलेन्द्रो [३]गो—गोवर्द्धनवरप्रदः ।
नन्दादिगोकुलत्राता दाता दारिद्र्यभञ्जनः ॥७॥

सर्वमङ्गलदाता च सर्वकामप्रदायकः ।
आदिकर्त्ता महीभर्त्ता सर्वसागरसिन्धुजः ॥८॥

गजगामी गजोद्धारी कामी कामकलानिधिः ।
कलङ्करहितश्चन्द्रो बिम्बास्यो बिम्बसत्तमः ॥९॥

१–दुर्वासा, २–गोपस्वामी, ३–'गो' इति नास्ति ।

मालाकार — कृपाकारः कोकिला — स्वरभूषणः ।
रामो नीलाम्बरो देवो हली [१]दुर्दाम—मर्दनः ॥१०॥

सहस्राक्षपुरीभेत्ता महामारी — विनाशनः ।
शिवः शिवतमो भेत्ता बलाराति प्रयोजकः[२] ॥११॥

कुमारीवरदायी च वरेण्यो मीनकेतनः ।
नरो नारायणो धीरो [३]धीरापतिरुदारधीः ॥१२॥

श्रीपतिः श्रीनिधिः श्रीमान् मापतिः [४]पतिराजहा ।
वृन्दापतिः कुलं ग्रामी [५]धाम ब्रह्म सनातनः ॥१३॥

रेवतीरमणो रामः [६]प्रियश्चञ्चललोचनः ।
रामायण—शरीरोऽयं रामी रामः श्रियः पतिः ॥१४॥

१—दुर्दम, दुर्मद, २—प्रभूजकः, ३—राधा, ४-प्र, ५—धामी, ६—चञ्चलश्चारु, ।

शर्वरः शर्वरी सर्वः सर्वत्र शुभदायकः ।
राधाराधयिता[1] ऽऽराधी राधाचित्तप्रमोदकः ॥१५॥

राधारतिसुखोपेतो राधामोहनतत्परः ।
राधावशीकरो राधाहृदयाम्भोजषट्पदः ॥१६॥

राधालिङ्गनसम्मोदो[2] राधानर्तनकौतुकः ।
राधासंगति[3] संप्रीतो राधाकाम्य[4] फलप्रदः ॥१७॥

वृन्दापतिः कोकनिधिः कोकशोकविनाशनः[5] ।
चन्द्रापतिश्चन्द्रपतिश्चण्डकोदण्डभञ्जनः ॥१८॥

रामो दाशरथी रामो भृगुवंशसमुद्भवः ।
आत्मारामो जितक्रोधो मोहो मोहान्धभञ्जनः ॥१९॥

१–तो, २–हो, ३–संजात, ४–काम, ५–कः ।

वृषभानुभवो [१]भावी काश्यपिः करुणानिधिः ।
कोलाहलो हली [२]हालो [३]हेली हलधरप्रियः ॥२०॥

राधामुखाब्जमार्त्तण्डो भास्करो[४] रविजो विधुः ।
विधिर्विधाता वरुणो वारुणो वारुणीप्रियः ॥२१॥

रोहिणीहृदयानन्दी वसुदेवात्मजो बली ।
नीलाम्बरो रौहिणेयो जरासन्धवधोऽमलः ॥२२॥

नागो [५]जवाम्भो विरुदोविरुहो[६] वरदो बली ।
गोपथो विजयी विद्वान् शिपिविष्टः सनातनः ॥२३॥

पर्शुराम – वचोग्राही वरग्राही शृगालहा ।
दमघोषोपदेष्टा च रथग्राही सुदर्शनः ॥२४॥

१–भावः, २–हाली, ३–हली, ४–विरजो, ५–न, ६–वीरहा ।

वीरपत्नीयशास्त्राता जराव्याधिविघातकः ।
द्वारकावासतत्त्वज्ञो हुताशनवरप्रदः ॥२५॥

यमुनावेगसंहारी नीलाम्बरधरः प्रभुः ।
विभुः शरासनो धन्वी गणेशो गणनायकः ॥२६॥

लक्ष्मणो लक्षणो लक्ष्यो रक्षोवंशविनाशनः ।
वामनो वामनीभूतोऽवामनो वामनारुहः ॥२७॥

यशोदानन्दनः कर्ता यमलार्जुनमुक्तिदः ।
उलूखली महामानो[1] दानबद्धाह्वयी शमी ॥२८॥

भक्तानुकारी भगवान् केशवो [2]बलधारकः ।
केशिहा मधुहा मोही वृषासुरविघातकः ॥२९॥

१–नी, २–चल ।

अघासुरविनाशी च पूतनामोक्षदायकः ।
कुब्जाविनोदी भगवान् कंसमृत्युर्महामखी ॥३०॥

अश्वमेधो वाजपेयो गोमेधो नरमेधवान् ।
कन्दर्पकोटिलावण्यश्चन्द्रकोटिसुशीतलः ॥३१॥

रविकोटि—प्रतीकाशो वायुकोटिमहाबलः ।
ब्रह्मा ब्रह्माण्डकर्त्ता च कमलावाञ्छितप्रदः ॥३२॥

कमली कमलाक्षश्च कमलामुखलोलुपः ।
कमलाव्रतधारी च कमलाक्षः[1] पुरन्दरः ॥३३॥

सौभाग्याधिकचित्तोऽयं महामायी महोत्कटः ।
ताडकारिः[2] सुरत्राता मारीचक्षोभकारकः ॥३४॥

१-भः, २-र ।

विश्वामित्रप्रियो दान्तो रामो राजीवलोचनः ।
लङ्काधिपकुलध्वंसी विभीषणवरप्रदः ॥३५॥

सीतानन्दकरो रामो वीरो वारिधिबन्धनः ।
खरदूषणसंहारी [1]संकेतपुरवासन[2] ॥३६॥

चन्द्रावलीपतिः कूलः केशि—कंसवधोऽमलः ।
माधवो मधुहा माध्वी माध्वीको माधवी [3]विभुः ॥३७॥

मुञ्जाटवीगाहमानो धेनुकारिर्धरात्मजः ।
वंशीवटविहारी च गोवर्द्धनवनाश्रयः ॥३८॥

तथा तालवनोद्देशी भाण्डीरवन [4]शंकहा ।
तृणावर्त— [5]कृपाकारी वृषभानुसुतापतिः ॥३९॥

१–सा, २–वान्, ३–मधु, ४–शंखहा, ५–कथा ।

राधाप्राणसमो राधावदनाब्ज— [१]मधुव्रतः ।
गोपीरञ्जनदैवज्ञो लीलाकमलपूजितः ॥४०॥

क्रीडाकमलसन्दोहो गोपिकाप्रीतिरञ्जनः ।
रञ्जको रञ्जनो रङ्गो रङ्गी रङ्गमहीरुहः ॥४१॥

कामः कामारिभक्तोऽयं पुराण–पुरुषः कविः ।
नारदो देवलो भीमो बालो बालमुखाम्बुजः ॥४२॥

अम्बुजो ब्रह्म - साक्षी च योगी दत्तवरो मुनिः ।
ऋषभः पर्वतो ग्रामो नदी–पवन–वल्लभः ॥४३॥

पद्मनाभः सुरज्येष्ठो ब्रह्मा रुद्रोऽहिभूषितः ।
गणानां त्राणकर्ता च गणेशो ग्रहिलो ग्रही ॥४४॥

१–मधूकरः ।

गणाश्रयो [1]गणाध्यक्ष: क्रोडीकृतजगत्त्रय: ।
यादवेन्द्रो द्वारकेन्द्रो मथुरावल्लभो धुरी ॥४५॥

भ्रमर: कुन्तली कुन्तीसुतरक्षी महामखी ।
यमुनावरदाता च कश्यपस्य वरप्रद: ॥४६॥

शङ्खचूडवधो — दामी गोपीरक्षण-तत्पर: ।
पाञ्चजन्यकरो रामी त्रिरामी वनजो जय: ॥४७॥

फाल्गुन: फाल्गुनसखो विराधवधकारक: ।
रुक्मिणीप्राणनाथश्च सत्यभामाप्रियङ्कर: ॥४८॥

कल्पवृक्षो महावृक्षो दानवृक्षो महाफल: ।
अंकुशो भूसरो भावो[2] भ्रामको भ्रामको हरि: ॥४९॥

१–गणक्रोधी, २–भामो ।

सरलः शाश्वतो वीरो यदुवंशी शिवात्मकः ।
प्रद्युम्नो बलकर्त्ता च प्रहर्त्ता दैत्यहा प्रभुः ॥५०॥

महाधनो महावीरो वनमाला—विभूषणः ।
तुलसीदामशोभाढ्यो जलन्धरविनाशनः ॥५१॥

शूरः सूर्योऽमृतण्डश्च भास्करो विश्वपूजितः ।
रविस्तमोहा वह्निश्च वाडवो वडवानलः ॥५२॥

दैत्यदर्पविनाशी च गरुडो गरुडाग्रजः ।
गोपीनाथो महानाथो वृन्दानाथो [1]विरोधकः ॥५३॥

प्रपञ्ची पञ्चरूपश्च लता गुल्मश्च गोपतिः ।
गङ्गा च यमुनारूपो गोदा वेत्रवती तथा ॥५४॥

१–ऽवि ।

कावेरी नर्मदा [1]तापी गण्डकी सरयू [2]रजः ।
राजसस्तामसः सत्त्वी सर्वाङ्गी सर्वलोचनः ॥५५॥

सुधामयोऽमृतमयो योगिनीवल्लभः शिवः ।
बुद्धो बुद्धिमतां श्रेष्ठो विष्णुर्जिष्णु शचीपतिः ॥५६॥

वंशी वंशी[3] –धरो लोक[4] –विलोको मोहनाशनः ।
रवरावो रवो रावो बलो बालो बलाहकः ॥५७॥

शिवो रुद्रो नलो नीलो लाङ्गुली [5]लाङ्गुलाश्रयः ।
पारदः पावनो हंसो हंसारूढो जगत्पतिः ॥५८॥

मोहिनी - मोहनो माया महामायी महा-[6] सुखी ।
वृषो वृषाकपिः कालः कालीदमनकारकः ॥५९॥

१–ताप्ती, २–तथा, ३–वंश, ४–लौको, ५–ङ्ग, ६–मखी ।

कुब्जाभाग्यप्रदो वीरो रजकक्षयकारकः ।
कोमलो [1]वारुणीराजो जलजो जलधारकः ॥६०॥

हारकः सर्वपापघ्नः परमेष्ठी पितामहः ।
खड्गधारी कृपाकारी राधारमणसुन्दरः ॥६१॥

द्वादशारण्यसंभोगी शेषनागफणालयः ।
कामः श्यामः सुखश्रीदः [2]श्रीहःश्रीदःपतिःकृती ॥६२॥

हरि [3]र्नारायणो नारो नरोत्तम इषुप्रियः ।
गोपालीचित्तहर्त्ता च कर्त्ता संसारतारकः ॥६३॥

आदिदेवो महादेवो गौरीगुरुरनाश्रयः ।
साधु [4]र्माधुर्विधुर्धाता त्राताऽक्रूर–परायणः ॥६४॥

१–वारुणोराजा, २–श्रीपतिः श्रीनिधिः कृती, ३–हरो नरो, ४–मधु ।

रोलम्बी च हयग्रीवो वानरारिर्वनाश्रयः ।
[1]वनं वनी वनाध्यक्षो, महाबन्धो[2] महामुनिः ।६५॥

स्यमन्तकमणिप्राज्ञो विज्ञो विघ्नविघातकः ।
गोवर्द्धनो वर्द्धनीयो वर्द्धनी–वर्द्धनप्रियः ॥६६॥

वर्द्धन्यो वर्द्धनो वर्द्धी वर्द्धिष्णुः सुमुखःप्रियः ।
वर्द्धितो वृद्धको वृद्धो वृन्दारक–जनप्रियः ॥६७॥

गोपालरमणीभर्त्ता साम्बकुष्ठविनाशनः ।
रुक्मिणीहरणप्रेमा प्रेमी चन्द्रावलीपतिः ॥६८॥

श्रीकर्त्ता विश्वभर्त्ता च [3]नारायणनरो बली ।
गणो गणपतिश्चैव दत्तात्रेयो महामुनिः ॥६९॥

१–वलं बलाध्यक्षो महाबुद्धो, २–वन्द्यो, ३–नरो नारायणो ।

व्यासो नारायणो दिव्यो भव्यो भावुकधारकः ।
स्वः श्रेयः शं शिवं भद्रं भावुकं भविकं शुभम् ॥७०॥
शुभात्मकः शुभःशास्ता प्रशस्तो मेघनादहा ।
ब्रह्मण्यदेवो दीनानामुद्धारकरणक्षमः ॥७१॥
कृष्णः कमलपत्राक्षः कृष्णः कमललोचनः ।
कृष्णःकामी सदाकृष्णः समस्तप्रियकारकः ॥७२॥
नन्दो नन्दी महानादी मादी मादनकः किली ।
मिली हिली गिली गोली गोलो गोलालयो गुली ॥७३॥
गुग्गुली मारकी शाखी वटः पिप्पलकः कृती ।
म्लेच्छहा कालहर्त्ता च यशोदायश एव च ॥७४॥
अच्युतः केशवो विष्णुर्हरिः सत्यो जनार्दनः ।
हंसो नारायणो नीलो लीनो भक्तिपरायणः ॥७५॥

जानकी-वल्लभो रामो विरामो [1]विषनाशनः ।
[2]सहभानु-र्महाभानुर्वीर— [3]भानुर्महोदधिः ॥७६॥

समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिः ।
गोकुलानन्दकारी च प्रतिज्ञा—परिपालकः ॥७७॥

सदारामः कृपारामो महारामो धनुर्धरः ।
पर्वतः पर्वताकारो गयो गेयो द्विजप्रियः ॥७८॥

कम्बलाश्वतरो रामो रामायण—प्रवर्त्तकः ।
द्यौर्दिवो दिवसो दिव्यो भव्यो भाविभयापहः ॥७९॥

पार्वती भाग्यसहितो [4]भर्त्ता लक्ष्मीविलासवान् ।
विलासी साहसी सर्वी गर्वी गर्वितलोचनः ॥८०॥

१–विघ्न, २–सहस्रांशु, ३–बाहु, ४–भ्राता ।

मुरारिर्लोकधर्मयज्ञो जीवनो जीवनान्तकः ।
यमो यमारि[1]-र्यमनो यामी यामविधायकः ॥८१॥

वंशुली पांशुली पांशुः पाण्डुरर्जुनवल्लभः ।
ललिता-चन्द्रिकामाली माली मालाम्बुजाश्रयः ॥८२॥

अम्बुजाक्षो महायक्षो दक्षश्चिन्तामणिः-प्रभुः ।
मणिर्दिनमणिश्चैव केदारो बदरीश्रयः ॥३३॥

बदरीवनसम्प्रीतो व्यासः सत्यवती-सुतः ।
अमरारिनिहन्ता च सुधासिन्धु-विधूदयः ॥८४॥

चन्द्रो रविः शिव शूलीः चक्री चैव गदाधरः ।
श्रीकर्त्ता श्रीपतिः श्रीदः श्रीदेवो देवकी-सुतः ॥८५॥

१-यमादि ।

श्रीपतिः पुण्डरीकाक्षः पद्मनाभो जगत्पतिः ।
वासुदेवोऽप्रमेयात्मा केशवो गरुडध्वजः ॥८६॥

नारायणः परं – धाम देवदेवो महेश्वरः ।
चक्रपाणिः कलापूर्णो वेदवेद्यो दयानिधिः ॥८७॥

भगवान् सर्वभूतेशो गोपालः सर्वपालकः ।
अनन्तो निर्गुणोऽनित्यो[1] निर्विकल्पो निरञ्जनः ॥८८॥

निराधारो निराकारो निराभासो निराश्रयः ।
पुरुषः प्रणवातीतो मुकुन्दः परमेश्वरः ॥८९॥

क्षणावनिः सार्वभौमो वैकुण्ठो भक्तवत्सलः ।
विष्णुर्दामोदरः कृष्णो माधवो मथुरापतिः ॥९०॥

१–ऽनन्तो ।

देवकी – गर्भ – संभूतो यशोदावत्सलो हरिः ।
शिवः सङ्कर्षणः शम्भुर्भूतनाथो दिवस्पतिः ॥९१॥

अव्ययः सर्वधर्मज्ञो निर्मलो निरुपद्रवः ।
निर्वाणनायको नित्यो नीलजीमूतसन्निभः ॥९२॥

कलाक्षयश्च सर्वज्ञः कमला – रूपतत्परः ।
हृषीकेशः पीतवासा वसुदेवप्रियात्मजः ॥९३॥

नन्दगोपकुमारार्यो नवनीताशनो [1]विभुः ।
पुराण – पुरुषः श्रेष्ठः शङ्खपाणिः सुविक्रमः ॥९४॥

अनिरुद्धश्चक्ररथः शार्ङ्गपाणिश्चतुर्भुजः ।
गदाधरः सुरार्त्तिघ्नो गोविन्दो नन्दकायुधः ॥९५॥

१–प्रभुः ।

वृन्दावनचरः शौरिर्वेणु – वाद्य – विशारदः ।
तृणावर्त्तान्तको भीमसाहसो बहुविक्रमः ॥९६॥

शकटासुरसंहारी बकासुर—विनाशनः ।
धेनुकासुरसंहारी पूतनारिर्नृकेसरी ॥९७॥

पितामहो गुरुः साक्षी प्रत्यगात्मा सदाशिवः ।
अप्रमेय – प्रभुः प्राज्ञोऽप्रतर्क्यः स्वप्नवर्द्धनः ॥९८॥

धन्यो मान्यो भवो भावो धीरः शान्तो जगद्गुरुः ।
अन्तर्यामीश्वरो दिव्यो दैवज्ञो [1]देवसंस्तुतः ॥९९॥

क्षीराब्धिशयनो धाता लक्ष्मीवान् लक्ष्मणाग्रजः ।
धात्रीपतिरमेयात्मा चन्द्रशेखर—पूजितः ॥१००॥

१–देवतागुरुः ।

लोकसाक्षी जगच्चक्षुः पुण्यचारित्रकीर्त्तनः ।
कोटिमन्मथसौन्दर्यो जगन्मोहनविग्रहः ॥१०१॥

मन्दस्मिततनो[1] गोप–गोपिका–परिवेष्टितः ।
फुल्लारबिन्दनयनश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः ॥१०२॥

इन्दीवरदलश्यामो बर्हिबर्हावतंसकः ।
मुरली - निनदाह्लादो दिव्यमाल्याम्बरावृतः ॥१०३॥

सुकपोलयुगः सुभ्रू - युगलः सुललाटकः ।
कम्बुग्रीवो विशालाक्षो लक्ष्मीवान् शुभलक्षणः ॥१०४॥

पीनवक्षाश्चतुर्बाहुश्चतुर्मूर्तिस्त्रिविक्रमः ।
कलङ्करहितः शुद्धो दुष्ट - शत्रु - निबर्हणः ॥१०५॥

१–तमो ।

किरीट—कुण्डल—धरः कटकाङ्गदमण्डितः ।
मुद्रिकाभरणोपेतः कटिसूत्रविराजितः ॥१०६॥
मञ्जीर-रञ्जित-पदः सर्वाभरणभूषितः ।
विन्यस्त-पादयुगलो दिव्यमङ्गलविग्रहः ॥१०७॥
गोपीकानयनानन्दः पूर्णचन्द्रनिभाननः ।
समस्तजगदानन्दः सुन्दरो लोकनन्दनः ॥१०८॥
यमुनातीरसञ्चारी राधा-मन्मथ-वैभवः ।
गोपनारीप्रियो दान्तो गोपीवस्त्रापहारकः ॥१०९॥
शृङ्गारमूर्तिः श्रीधाम तारको मूलकारणम् ।
सृष्टिसंरक्षणोपायः क्रूरासुर—विभञ्जनः ॥११०॥
नरकासुरसंहारी मुरारिवैरिमर्दनः ।
आदितेयप्रियो दैत्यभीकरो[1] यदु-शेखरः ॥१११॥

१–करश्चेन्दु ।

जरासन्धकुलध्वंसी कंसारातिः सुविक्रमः ।
पुण्यश्लोकः कीर्तनीयो यादवेन्द्रो जगन्नुतः ॥११२॥

रुक्मिणीरमणः सत्यभामा–जाम्बवतीप्रियः ।
मित्रविन्दा - नाग्नजिती - लक्ष्मणा - समुपासितः ॥११३॥

सुधाकरकुले जातोऽनन्त - प्रबल - विक्रमः ।
सर्वसौभाग्यसम्पन्नो द्वारका- [1]पट्टन - स्थितः ॥११४॥

भद्रासूर्यसुतानाथो लीला—मानुष—विग्रहः ।
सहस्रषोडशस्त्रीशो भोगमोक्षैक–दायकः ॥११५॥

वेदान्तवेद्यः संवेद्यो वैद्यो ब्रह्माण्डनायकः ।
गोवर्द्धनधरो नाथः सर्वजीवदयापरः ॥११६॥

१–यामुप ।

मूर्तिमान् सर्वभूतात्मा आर्त्तत्राणपरायणः ।
सर्वज्ञः सर्वसुलभः सर्वशास्त्र—विशारदः ॥११७॥

षड्गुणैश्वर्य्य—सम्पन्नः पूर्णकामो धुरन्धरः ।
महानुभावः कैवल्य - [1]नायको लोकनायकः ॥११८॥

आदिमध्यान्तरहितः शुद्ध - सात्त्विक - विग्रहः ।
असमानः समस्तात्मा शरणागत - वत्सलः ॥११९॥

उत्पत्ति - स्थिति - संहार - कारणं सर्वकारणम् ।
गम्भीरः सर्वभावज्ञः सच्चिदानन्द—विग्रहः ॥१२०॥

विष्वक्सेनः सत्यसन्धः सत्यवाक्[2] सत्यविक्रमः ।
सत्यव्रतः सत्य— [3]रतः [4]सत्य - धर्मपरायणः ॥१२१॥

१—दायको, २—वान्, ३—संज्ञः, ४—भक्ति ।

आपन्नार्त्ति - प्रशमनो द्रौपदी - मान - रक्षकः ।
कन्दर्प - जनकः प्राज्ञो जगन्नाटक - वैभवः ॥१२२॥

[1]भक्त - वश्यो गुणातीतः सर्वैश्वर्य - प्रदायकः ।
दमघोष - सुत - द्वेषी बाण - बाहु - विखण्डनः ॥१२३॥

भीष्म - भक्ति - प्रदो दिव्यः कौरवान्वय - नाशनः ।
कौन्तेय - प्रिय - बन्धुश्च पार्थ - स्यन्दन - सारथिः ॥१२४॥

नारसिंहो महावीरः स्तम्भजातो महाबलः ।
प्रह्लाद - वरद सत्यो देवपूज्योऽभयङ्करः ॥१२५॥

उपेन्द्र इन्द्रावरजो वामनो बलि - बन्धनः ।
गजेन्द्र - वरदः स्वामी सर्व - देव नमस्कृतः ॥१२६॥

१-भक्ति ।

शेष - पर्य्यङ्क - शयनो वैनतेय - रथो जयी ।
अव्याहत - बलैश्वर्य्य - सम्पन्नः पूर्ण - मानसः ॥१२७॥
योगेश्वरेश्वरः साक्षी क्षेत्रज्ञो ज्ञान - दायकः ।
योगि - हृत्पङ्कजावासो योगमाया - समन्वितः ॥१२८॥
नाद—बिन्दु—कलातीतश्चतुर्वर्ग—फलप्रदः ।
सुषुम्णा - मार्ग - सञ्चारी देहस्यान्तर संस्थितः ॥१२९॥
देहेन्द्रिय—मनः—प्राण—साक्षी चेतः प्रसादकः ।
सूक्ष्मः सर्वगतो देही ज्ञान—दर्पण—गोचरः ॥१३०॥
तत्त्व—त्रयात्मकोऽव्यक्तः कुण्डली—समुपाश्रितः ।
ब्रह्मण्यः सर्वधर्मज्ञः शान्तो दान्तो गतक्लमः ॥१३१॥
श्रीनिवासः सदानन्दो विश्वमूर्तिर्महाप्रभुः ।
सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥१३२॥

समस्त—भुवनाधारः समस्त—प्राण—रक्षकः ।
समस्तः सर्वभावज्ञो गोपिका - प्राण - वल्लभः ॥१३३॥
नित्योत्सवो नित्य - सौख्यो नित्यश्रीर्नित्य - मङ्गलः ।
व्यूहार्चितो जगन्नाथः श्रीवैकुण्ठपुराधिपः ॥१३४॥
पूर्णानन्द - घनीभूतो गोप - वेषधरो हरिः ।
[1]कलाप - कुसुम - श्यामः कोमलः शान्तविग्रहः ॥१३५॥
गोपाङ्गनावृतोऽनन्तो वृन्दावन - समाश्रयः ।
[2]गोपाल - कामिनी - जारश्चोर - जार - शिखामणिः ॥१३६॥

१—कलाय कुसुम श्यामः ।

२—इतः पूर्वं बेणु—वाद रतः श्रेष्ठो देवानां हितकारकः ।
बाल क्रीड़ा समासक्तो नवनीतस्य तस्करः ॥
इत्यधिकम् अयं पाठः प्राचीने हस्तलिखिते विवृति (संस्कृत टीका) सहिते गोपाल-सहस्रनामस्तोत्रे नास्ति । अतो मूले न परिगृहीतः ।

परं ज्योतिः पराकाशः परावासः परिस्फुटः ।
अष्टादशाक्षरो [1]मंत्र - व्यापको - लोक - पावनः ॥१३७॥

सप्तकोटि–महामन्त्र–शेखरो देव–शेखरः ।
ज्ञान—विज्ञान—सन्धानस्तेजोराशिर्जगत्पतिः ॥१३८॥

भक्त–लोक–प्रसन्नात्मा भक्त–मन्दार - विग्रहः ।
भक्तदारिद्र्य - दमनो भक्तानां प्रीतिदायकः ॥१३९॥

भक्ताधीनमनाः पूज्यो भक्तलोक–शिवङ्करः ।
भक्ताभीष्टप्रदः सर्वभक्ताघौघ–निकृन्तनः ॥१४०॥

अपारकरुणा—सिन्धुर्भगवान् भक्ततत्परः ।

卐

१–मन्त्रो ।

* अथ फल-स्तुति *

इति श्रीराधिकानाथ—सहस्रनाम - कीर्तितम् ।
स्मरणात्पापराशीनां खण्डनं मृत्युनाशनम् ॥१॥

वैष्णवानां प्रियकरं महारोग—निवारणम् ।
ब्रह्महत्या सुरापानं परस्त्रीगमनं तथा ॥२॥

परद्रव्यापहरणं परद्वेषसमन्वितम् ।
मानसं वाचिकं पापं यत्पापं कायसम्भवम् ॥३॥

सहस्रनामपठनात्सर्वं नश्यति तत्क्षणात् ।
महादारिद्र्य-युक्तोऽपि वैष्णवो विष्णुभक्तिमान् ॥४॥

कार्त्तिक्यां यः पठेद्रात्रौ शतमष्टोत्तरं क्रमात् ।
पीताम्बरधरो धीमान्सुगन्धैः पुष्पचन्दनैः ॥५॥

पुस्तकं पूजयित्वा तु नैवेद्यादिभिरेव च ।
राधाध्यानाङ्कितो धीरो वनमालाविभूषितः ॥६॥
शतमष्टोत्तरं देवि पठेन्नामसहस्रकम् ।
चैत्रे शुक्ले च कृष्णे च कुहूसंक्रान्तिवासरे ॥७॥
पठितव्यं प्रयत्नेन त्रैलोक्य मोहयेत्क्षणात् ।
तुलसीमालया युक्तो वैष्णवो भक्तितत्परः ॥८॥
रविवारे च शुक्रे च द्वादश्यां श्राद्धवासरे ।
ब्राह्मणं पूजयित्वा च भोजयित्वा विधानतः ॥९॥
पठेन्नामसहस्रञ्च ततः सिद्धिमवाप्नुयात् ।
महानिशायां सततं वैष्णवो यः पठेत्सदा ॥१०॥
देशान्तरगता लक्ष्मीस्तमायाति न संशयः ।
त्रैलोक्ये च महादेवि सुन्दर्यः काममोहिताः ॥११॥

मुग्धाः स्वयं सभायान्ति वैष्णवञ्च भजन्ति ताः ।
रोगी रोगात्प्रमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात् ॥१२॥

गुर्विणी जनयेत्पुत्रं कन्या विदन्ति सत्पतिम् ।
राजानो वश्यतां यान्ति किं पुनः क्षुद्रमानवाः ॥१३॥

सहस्रनामश्रवणात् पठनात्पूजनात् प्रिये ।
धारणात्सर्वमाप्नोति वैष्णवो नात्र संशयः ॥१४॥

वंशीवटे चान्यवटे तथा पिप्पलकेऽथवा ।
कदम्ब-पादप-तले गोपाल—मूर्ति—सन्निधौ ॥१५॥

यः पठेद्वैष्णवो नित्यं स याति हरिमन्दिरम् ।
कृष्णेनोक्तं राधिकायै मयि प्रोक्तं पुरा [1]प्रिये ॥१६॥

१–शिवे ।

नारदाय मया प्रोक्तं नारदेन प्रकाशितम् ।
मया त्वयि वरारोहे प्रोक्तमेतत्सुदुर्लभम् ॥१७॥

गोपनीयं प्रयत्नेन न प्रकाश्यं कथञ्चन ।
शठाय पापिने चैव लम्पटाय विशेषतः ॥१८॥

न दातव्यं न दातव्यं न दातव्यं [1]कदाचन ।
देयं शिष्याय शान्ताय विष्णुभक्तिरताय च ॥१९॥

गोदान—ब्रह्मयज्ञादेर्वाजपेयशतस्य च ।
अश्वमेधसहस्रस्य फलं पाठे भवेद् ध्रुवम् ॥२०॥

मोहनं स्तम्भनं चैव मारणोच्चाटनादिकम् ।
यद्यद्वाञ्छति चित्तेन तत्तत्प्राप्नोति वैष्णवः ॥२१॥

१—कथञ्चन ।

एकादश्यां नरः स्नात्वा सुगन्धिद्रव्यतैलकैः ।
आहारं ब्राह्मणे दत्त्वा दक्षिणां स्वर्णभूषणम् ॥२२॥
तत आरम्भ—कर्ताऽस्य सर्वं प्राप्नोति मानवः ।
शतावृत्तं सहस्रञ्च यः पठेद्वैष्णवो जनः ॥२३॥
श्रीवृन्दावनचन्द्रस्य प्रसादात्सर्वमाप्नुयात् ।
यद्गृहे पुस्तकं देवि पूजितं चैव तिष्ठति ॥२४॥
न मारी न च दुर्भिक्षं नोपसर्गभयं क्वचित् ।
सर्पादिभूतयक्षाद्या नश्यन्ति नात्र संशयः ॥२५॥
श्रीगोपालो महादेवि वसेत्तस्य गृहे सदा ।
गृहे यत्र सहस्रं च नाम्नां तिष्ठति पूजितम् ॥२६॥

इति श्रीसम्मोहनतन्त्रे पार्वतीश्वरसम्वादे
श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

卐

* अथ श्रीगोपाल-कवचम् *

श्रीमहादेव उवाच—

अथ वक्ष्यामि कवचं गोपालस्य जगद्गुरोः ।
यस्य स्मरणमात्रेण जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥१॥
शृणु देवि प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय ।
नारदोऽस्य ऋषिर्देवि छन्दोऽनुष्टुबुदाहृतम् ॥२॥
देवता बालकृष्णश्च चतुर्वर्ग—प्रदायकः ।
शिरो मे बालकृष्णश्च पातु नित्यं मम श्रुती ॥३॥
नारायणः पातु कण्ठं गोपीवन्द्यः कपोलकम् ।
नासिके मधुहा पातु चक्षुषी नन्दनन्दनः ॥४॥
जनार्दनः पातु दन्तानधरं माधवस्तथा ।
ऊर्ध्वोष्ठं पातु वाराहश्चिबुकं केशिसूदनः ॥५॥

हृदयं गोपिकानाथो नाभिं सेतुप्रदः सदा ।
हस्तौ गोवर्द्धनधरः पादौ पीताम्बरोऽवतु ॥६॥
कराङ्गुली श्रीधरो मे पादाङ्गुलीः कृपामयः ।
लिङ्गं पातु गदापाणिर्बालक्रीड़ा—मनोरमः ॥७॥
जगन्नाथः पातु पूर्वं श्रीरामोऽवतु पश्चिमम् ।
उत्तरं कैटभारिश्च दक्षिणं हनुमत्प्रभुः ॥८॥
आग्नेय्यां पातु गोविन्दो नैर्ॠत्यां पातु केशवः ।
वायव्यां पातु दैत्यारिरैशान्यां गोपनन्दनः ॥९॥
ऊर्ध्वं पातु प्रलम्बारिरधः कैटभमर्दनः ।
शयानं पातु पूतात्मा गतौ पातु श्रियः पतिः ॥१०॥
शेषः पातु निरालम्बे जाग्रद्भावे ह्यपां पतिः ।
भोजने केशिहा पातु कृष्णः सर्वाङ्ग—सन्धिषु ॥११॥

गणनासु निशानाथो दिवानाथो दिनक्षये ।
इति ते कथितं दिव्यं कवचं परमाद्भुतम् ॥१२॥
यः पठेन्नित्यमेवेदं कवचं प्रयतो नरः ।
तस्याशु विपदो देवि नश्यन्ति रिपुसंघतः ॥१३॥
अन्ते गोपालचरणं प्राप्नोति परमेश्वरि ।
त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा यः पठेच्छृणुयादपि ॥१४॥
तं सर्वदा रमानाथः परिपाति चतुर्भुजः ।
अज्ञात्वा कवचं देवि गोपालं पूजयेद्यदि ॥१५॥
सर्वं तस्य वृथा देवि जप—होमार्चनादिकम् ।
सशस्त्रघात संप्राप्य मृत्युमेति न संशयः ॥१६॥

इति श्रीनारद-पञ्चरात्रे ज्ञानामृतसारे चतुर्थरात्रे
गोपालकवचं नाम सप्तमोऽध्यायः ।

卐

* अथ श्रीराधाकवचम् *

पार्वत्युवाच—

कैलाशवासिन् भगवन् भक्तानुग्रहकारक ।
राधिकाकवचं पुण्यं कथयस्व मम प्रभो ॥१॥
यद्यस्ति करुणानाथ त्राहि मां दुःखतो भयात् ।
त्वमेव शरणं नाथ शूलपाणे पिनाकधृक् ॥२॥

शिव उवाचः—

शृणुष्व गिरिजे तुभ्यं कवचं पूर्व-संचितम् ।
सर्वरक्षाकरं पुण्यं सर्वहत्याहरं परम् ॥३॥
हरिभक्तिप्रदं साक्षाद् भुक्ति-मुक्ति-प्रसाधनम् ।
त्रैलोक्याकर्षणं देवि हरि-सान्निध्य-कारकम् ॥४॥
सर्वत्र जयदं देवि सर्व-शत्रु-भयावहम् ।
सर्वेषां चैव भूतानां मनोवृत्तिहरं परम् ॥५॥

चतुर्धा मुक्तिजनकं सदानन्दकरं परम् ।
राजसूयाश्वमेधानां यज्ञानां फलदायकम् ॥६॥
इदं कवचमज्ञात्वा राधा-मन्त्रं च यो जपेत् ।
स नाप्नोति फलं तस्य विघ्नस्तस्य पदे पदे ॥७॥
ऋषिरस्य महादेवोऽनुष्टुप् छन्दश्च कीर्तितम् ।
राधाऽस्य देवता प्रोक्ता रां बीजं कीलकं स्मृतम् ॥८॥
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ।
श्रीराधा मे शिरः पातु ललाटं राधिका तथा ॥९॥
श्रीमती नेत्रयुगलं कर्णौ गोपेन्द्रनन्दिनी ।
हरिप्रिया नासिकां च भ्रूयुगं शशि-शोभना ॥१०॥
ओष्ठं पातु कृपा देवी अधरं गोपिका तथा ।
वृषभानुसुता दन्तांश्चिबुकं गोपनन्दिनी ॥११॥

चन्द्रावली पातु गण्डं जिह्वां कृष्णप्रिया तथा ।
कण्ठं पातु हरिप्राणा हृदयं विजया तथा ॥१२॥
बाहू द्वौ चन्द्रवदना उदरं सुबल—स्वसा ।
कोटियोगान्विता पातु पादौ सौभद्रिका तथा ॥१३॥
नखांश्चन्द्रमुखी पातु गुल्फौ गोपालवल्लभा ।
जानुदेशं जया पातु गोपी पादतलं तथा ॥१४॥
शुभप्रदा पातु पृष्ठं कुक्षौ श्रीकान्तवल्लभा ।
जानुदेशं जया पातु हरिणी पातु सर्वतः ॥१५॥
वाक्यं वाणी सदा पातु धनागारं धनेश्वरी ।
पूर्वां दिशं कृष्णरता कृष्णप्राणा च पश्चिमाम् ॥१६॥
उत्तरां हरिता पातु दक्षिणां वृषभानुजा ।
चन्द्रावली निशामेव दिवाक्ष्वेडित—मेखला ॥१७॥

सौभाग्यदा मध्यदिने सायाह्ने कामरूपिणी ।
रौद्री प्रातः पातु मां हि गोपिनी रजनीक्षये ॥१८॥
हेतुदा संगवे पातु केतुमाला दिवार्धके ।
शेषाऽपराह्नसमये शमिता सर्वसन्धिषु ॥१९॥
योगिनी भोगसमये रतौ रतिप्रदा सदा ।
कामेशी कौतुके नित्यं यागे रत्नावली मम ॥२०॥
सर्वदा सर्वकार्येषु राधिका कृष्णमानसा ।
इत्येतत्कथितं देवि कवचं परमाद्भुतम् ॥२१॥
सर्वरक्षाकरं नाम महारक्षाकरं परम् ।
प्रातर्मध्याह्न–समये सायाह्ने प्रपठेद्यदि ॥२२॥
सर्वार्थ—सिद्धिस्तस्य स्याद्यद्यन्मनसि वर्तते ।
राजद्वारे सभायां च संग्रामे शत्रु–संकटे ॥२३॥

प्राणार्थनाश–समये यः पठेत्प्रयतो नरः ।
तस्य सिद्धिर्भवेद्देवि न भयं विद्यते क्वचित् ॥२४॥

आराधिता राधिका च तेन सत्यं न संशयः ।
गङ्गास्नानाद्धरेर्नाम—ग्रहणाद्यत्फलं भवेत् ॥२५॥

तत्फलं तस्य भवति यः पठेत् प्रयतः शुचिः ।
हरिद्रा–रोचना–चन्द्र–मण्डितं हरिचन्दनम् ॥२६॥

कृत्वा लिखित्वा भूर्जे च धारयेन्मस्तके भुजे ।
कण्ठे वा देवदेवेशि स हरिर्नात्र संशयः ॥२७॥

कवचस्य प्रसादेन ब्रह्मा सृष्टिं स्थितिं हरिः ।
संहारं नियतं चाहं करोमि कुरुते तथा ॥२८॥

वैष्णवाय विशुद्धाय विरागगुणाशालिने ।
दद्यात्कवचमव्यग्रमन्यथा नाशमाप्नुयात् ॥२८॥

इति श्रीनारदपञ्चरात्रे ज्ञानामृतसारे
श्रीराधाकवचं सम्पूर्णम् ।

卐

* अथ श्रीराधिका-मन्त्रः *

"क्लीं श्रीं राधिकायै स्वाहा"

अस्य श्रीराधिकामन्त्रस्य अगस्त्य ऋषिः जगती छन्दः श्रीराधिका सर्वेश्वरी देवता क्लीं बीजं स्वाहा शक्तिः क्लीं श्रीं कीलकं श्रीराधाकृष्ण–प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

अगस्त्यर्षये नमः शिरसि । जगती छन्दसे नमो मुखे । श्रीराधिकासर्वेश्वरी-देवतायै नमो हृदये । क्लीं बीजाय नमो गुह्ये । स्वाहा शक्तये नमः पादयोः । क्लीं श्रीं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

क्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । श्रीं तर्जनीभ्यां नमः । राधिकायै स्वाहा मध्यमाभ्यां

नमः । क्लीं अनामिकाभ्यां नमः । श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । राधिकायै स्वाहा करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः ।

क्लीं हृदयाय नमः श्रीं शिरसे स्वाहा । राधिकायै स्वाहा शिखायै वषट् । क्लीं कवचाय हुम् । श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् । राधिकायै स्वाहा अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम्

जगद्भर्तुर्विश्व-संमोहनस्य श्रीकृष्णस्य प्राणतोऽधिकामपि ।
वृन्दारण्ये स्वेष्टदेवीं च नित्यं तां राधिकां वनधात्रीं नमामः ॥

किरीट—केयूर—धरे नूपुराभात—पादुके ।
नैक—भूषणसंयुक्ते राधिके त्वं प्रसीद मे ॥

इति ध्यात्वा जपेत् । जपावसाने पुनः ऋष्यादि न्यासान् विधाय ध्यात्वा च निवेदयेत्—

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि ॥

लक्षमात्रं पुरश्चरणम् । कलौ चतुर्लक्षं जपित्वा कुशली भवेत् ।

अथ श्रीमहालक्ष्म्यष्टकस्तव-प्रारम्भ

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शङ्ख-चक्र-गदा-हस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥१॥

नमस्ते गरुडारूढे कोलासुर—भयङ्करि ।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥२॥

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्व—दुष्ट—भयङ्करि ।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥३॥

सिद्धि-बुद्धि-प्रदे देवि भुक्ति-मुक्ति-प्रदायिनि ।
मन्त्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥४॥

आद्यन्तरहिते देवि चाद्यशक्ते महेश्वरि ।
योगजे योगसंभूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥५॥

स्थूले सूक्ष्मे महारौद्रे महाशक्ति मनोहरे ।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥६॥
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥७॥
श्वेताम्बधरे देवि नानालङ्कारभूषणे ।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥८॥
महालक्ष्म्यष्टक-स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः ।
सर्व-सिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ॥९॥
एककालं पठेन्नित्यं महापापविनाशकम् ।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धन-धान्य-समन्वितः ॥१०॥
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रु-विनाशकम् ।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ॥११॥

इतीन्द्रकृतः श्रीमहालक्ष्म्यष्टकस्तवः सम्पूर्णः ।

अथ श्रीगोपालषोडशनाम स्तोत्रम्

औषधे चिन्तयेद् विष्णुं भोजने च जनार्दनम् ।
शयने पद्मनाभं च विवाहे च प्रजापतिम् ॥१॥
युद्धे चक्रधरं देवं प्रवासे च त्रिविक्रमम् ।
नारायणं तनुत्यागे श्रीधरं प्रियसङ्गमे ॥२॥
दुःस्वप्ने स्मर गोपालं संकटे मधुसूदनम् ।
कानने नारसिंहं च पावके जलशायिनम् ॥३॥
जलमध्ये वराहं च पर्वते रघुनन्दनम् ।
गमने वामनं चैव सर्वकार्येषु माधवम् ॥४॥
षोडशैतानि नमानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोके महीमते ॥५॥

इति श्रीगोपालषोडशनाम स्तोत्रम् ।

अथ श्रीगोपालसहस्र नामावली प्रयोगः

कर्ता कृतनित्यक्रिय आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य "श्रीराधा-गोपाल प्रीत्यर्थं "श्रीगोपालसहस्रनाम स्तोत्रान्तर्गतैः सहस्रनामभिरमुकद्रव्यार्पणं हवनं वाऽहं करिष्ये" इति संकल्प्य पूर्वोक्तक्रमेण न्यासान् विधाय ध्यायेत्—ततश्च सहस्रनामभिः सङ्कल्पितद्रव्यार्पणं कुयात्, तद्यथा—

अथ श्रीगोपालसहस्रनामावली प्रारभ्यते

१ क्लीं श्रीदेवाय नमः ।
२ कामदेवाय नमः ।
३ कामबीजशिरोमणये नमः ।
४ श्रीगोपालाय नमः
५ महीपालाय नमः ।
६ वेदवेदाङ्गपारगाय नमः ।
७ धरणीपालकाय नमः ।
८ धन्याय नमः ।
९ पुण्डरीकाय नमः ।
१० सनातनाय नमः ।
११ गोपतये नमः ।
१२ भूपतये नमः ।
१३ शास्त्रे नमः ।
१४ प्रहर्त्रे नमः ।

१५ विश्वतोमुखाय नमः ।

१६ आदिकर्त्रे नमः ।

१७ महाकर्त्रे नमः ।

१८ महाकालाय नमः ।

१९ प्रतापवते नमः ।

२० जगज्जीवाय नमः ।

२१ जगद्धात्रे नमः ।

२२ लगद्भर्त्रे नमः ।

२३ जगद्वसवे नमः ।

२४ मत्स्याय नमः ।

२५ भीमाय नमः ।

२६ कुहूभर्त्रे नमः ।

२७ हर्त्रे नमः ।

२८ वाराहमूर्तिमते नमः ।

२९ नारायणाय नमः ।

३० हृषीकेशाय नमः ।

३१ गोविन्दाय नमः ।

३२ गरुड़ध्वजाय नमः ।

३३ गोकुलेन्द्राय नमः ।

३४ महीचन्द्राय नमः ।

३५ शर्वरीप्रियकारकाय नमः ।

३६ कमलामुखलोलाक्षाय नमः ।

३७ पुण्डरीकाय नमः ।

३८ शुभावहाय नमः ।

३९ दूर्वाशाय नमः ।

४० कपिलाय नमः ।

४१ भौमाय नमः ।

४२ सिन्धुसागरसङ्गमाय नमः ।

४३ गोविन्दाय नमः ।

४४ गोपतये नमः ।

४५ गोत्राय नमः ।

४६ कालिन्दीप्रेमपूरकाय नमः ।

४७ गोस्वामिने नमः ।

४८ गोकुलेन्द्राय नमः ।

४९ गो-गोवर्द्धनवरप्रदाय नमः ।

५० नन्दादि गोकुलत्रात्रे नमः ।

५१ दात्रे नमः ।

५२ दारिद्रचभञ्जनाय नमः ।

५३ सर्वमङ्गलदात्रे नमः ।

५४ सर्वकामप्रदायकाय नमः ।

५५ आदिकर्त्रे नमः ।

५६ महीभर्त्रे नमः ।

५७ सर्वसागरसिन्धुजाय नमः ।

५८ गजगामिने नमः ।

५९ गजोद्धारिणे नमः ।

६० कामिने नमः ।

६१ कामकलानिधये नमः ।

६२ कलङ्करहिताय नमः ।

६३ चन्द्राय नमः ।

६४ बिम्बास्याय नमः ।

६५ बिम्बसत्तमाय नमः ।

६६ मालाकारकृपाकाराय नमः ।

६७ कोकिलास्वरभूषणाय नमः ।

६८ रामाय नमः ।

६९ नीलाम्बराय नमः ।

७० देवाय नमः ।

७१ हलिने नमः ।

७२ दुर्दमिमर्दनाय नमः ।

७३ सहस्राक्षपुरीभेत्रे नमः ।

७४ महामारीविनाशनाय नमः ।

७५ शिवाय नमः ।

७६ शिवतमाय नमः ।

७७ भेत्त्रे नमः ।

७८ बलारातिप्रयोजकाय नमः ।

७९ कुमारीवरदायिने नमः ।

८० वरेण्याय नमः ।

८१ मीनकेतनाय नमः ।

८२ नराय नमः ।

८३ नारायणाय नमः ।

८४ धीराय नमः ।

८५ धीरापतये नमः ।

८६ उदारधिये नमः ।

८७ श्रीपतये नमः ।

८८ श्रीनिधये नमः ।

८९ श्रीमते नमः ।

९० मापतये नमः ।

९१ पतिराजघ्ने नमः ।

९२ वृन्दापतये नमः ।

९३ कुलाय नमः ।

९४ ग्रामिणे नमः ।

९५ धाम्ने नमः ।

९६ ब्रह्मणे नमः ।

९७ सनातनाय नमः ।

९८ रेवतीरमणाय नमः ।

९९ रामाय नमः ।

१०० प्रियाय नमः ।

१०१ चञ्चललोचनाय नमः ।

१०१ रामायणशरीराय नमः ।

१०३ रामिणे नमः ।

१०४ रामाय नमः ।

१०५ श्रियःपतये नमः ।
१०६ शर्वराय नमः ।
१०७ शर्वर्यै नमः ।
१०८ सर्वाय नमः ।
१०९ सर्वत्र शुभदायकाय नमः ।
११० राधाराधयित्रे नमः ।
१११ आराधिने नमः ।
११२ राधाचित्तप्रमोदकाय नमः
११३ राधारतिसुखोपेताय नमः ।
११४ राधामोहनतत्पराय नमः ।
११५ राधावशीकराय नमः ।
११६ राधाहृदयाम्भोजषट्पदाय नमः
११७ राधालिङ्गन संमोदाय नमः ।
११८ राधानर्तन-कौतुकाय नमः ।
११९ राधा-संगति-संप्रीताय नमः ।
१२० राधाकाम्यफलप्रदाय नमः ।
१२१ वृन्दापतये नमः ।
१२२ कोक-निधये नमः ।
१२३ कोक-शोक-विनाशाय नमः ।
१२४ चन्द्रापतये नमः ।
१२५ चन्द्रपतये नमः ।
१२६ चण्ड-कोदण्ड-भञ्जनाय नमः ।
१२७ रामाय नमः ।
१२८ दाशरथये नमः ।
१२९ रामाय नमः ।
१३० भृगुवंश-समुद्भवाय नमः ।
१३१ आत्मारामाय नमः ।
१३२ जितक्रोधाय नमः ।
१३३ मोहाय नमः ।
१३४ मोहान्ध-भञ्जनाय नमः ।

१३५ वृषभानु-भवाय नमः ।
१३६ भाविने नमः ।
१३७ काश्यपये नमः ।
१३८ करुणानिधये नमः ।
१३९ कोलाहलाय नमः ।
१४० हलिने नमः ।
१४१ हालाय नमः ।
१४२ हेलिने नमः ।
१४३ हलधरप्रियाय नमः ।
१४४ राधामुखाब्जमार्त्तण्डाय नमः ।
१४५ भास्कराय नमः ।
१४६ रविजाय नमः ।
१४७ विधवे नमः ।
१४८ विधये नमः ।
१४९ विधात्रे नमः।
१५० वरुणाय नमः ।
१५१ वारुणाय नमः ।
१५२ वारुणी-प्रियाय नमः ।
१५३ रोहिणी-हृदयानन्दिने नमः ।
१५४ वासुदेवात्मजाय नमः ।
१५५ बलिने नमः ।
१५६ नीलाम्बराय नमः ।
१५७ रौहिणेयाय नमः ।
१५८ जरासन्धबधाय नमः ।
१५९ अमलाय नमः ।
१६० नागाय नमः ।
१६१ जवाम्भाय नमः ।
१६२ विरुदाय नमः ।
१६३ विरुहाय नमः ।
१६४ वरदाय नमः ।

१६५ बलिने नमः ।

१६६ गोपथाय नमः ।

१६७ विजयिने नमः ।

१६८ विदुषे नमः ।

१६९ शिपिविष्टाय नमः ।

१७० सनातनाय नमः ।

१७१ परशुरामवचोग्राहिणे नमः ।

१७२ वरग्राहिणे नमः ।

१७३ शृगालघ्ने नमः ।

१७४ दमघोषोपदेष्ट्रे नमः ।

१७५ रथग्राहिणे नमः ।

१७६ सुदर्शनाय नमः ।

१७७ वीरपत्नीयशस्त्रात्रे नमः ।

१७८ जराव्याधिविघातकाय नमः ।

१८९ द्वारकावास-तत्त्वज्ञाय नमः ।

१८० हुताशन-वर-प्रदाय नमः ।

१८१ यमुनावेग-संहारिणे नमः ।

१८२ नीलाम्बर-धराय नमः ।

१८३ प्रभवे नमः ।

१८४ विभवे नमः ।

१८५ शरासनाय नमः ।

१८६ धन्विने नमः ।

१८७ गणेशाय नमः ।

१८८ गणनायकाय नमः ।

१८९ लक्ष्मणाय नमः ।

१९० लक्षणाम नमः ।

१९१ लक्ष्याय नमः ।

१९२ रक्षोवंशविनाशनाय नमः ।

१९३ वामनाय नमः ।

१९४ वामनीभूताय नमः ।

१९५ अवामनाय नमः ।
१९६ वामनारुहाय नमः ।
१९७ यशोदानन्दनाय नमः ।
१९८ कर्त्रे नमः ।
१९९ यमलार्जुनमुक्तिदाय नमः ।
२०० उलूखलिने नमः ।
२०१ महामानाय नमः ।
२०२ दामबद्धाह्वयिने नमः ।
२०३ शमिने नमः ।
२०४ भक्तानुकारिणे नमः ।
२०५ भगवते नमः ।
२०६ केशवाय नमः ।
२०७ बलधारकाय नमः ।
२०८ केशिघ्ने नमः ।
२०९ मधुघ्ने नमः ।
२१० मोहिने नमः ।
२११ वृषासुरविघातकाय नमः ।
२१२ अघासुर-विनाशिने नमः ।
२१३ पूतना-मोक्षदायकाय नमः ।
२१४ कुब्जाविनोदिने नमः ।
२१५ भगवते नमः ।
२१६ कंसमृत्यवे नमः ।
२१७ महामखिने नमः ।
२१८ अश्वमेधाय नमः ।
२१९ वाजपेयाय नमः ।
२२० गोमेधाय नमः ।
२२१ नरमेधवते नमः ।
२२२ कन्दर्प कोटिलावण्याय नमः ।
२२३ चन्द्रकोटिसुशीतलाय नमः ।
२२४ रविकोटिप्रतीकाशाय नमः ।

२२५ वायुकोटिमहाबलाय नमः ।

२२६ ब्रह्मणे नमः ।

२२७ ब्रह्माण्डकर्त्रे नमः ।

२२८ कमलावाञ्छितप्रदाय नमः ।

२२९ कमलिने नमः ।

२३० कमलाक्षाय नमः ।

२३१ कमलामुखलोलुपाय नमः ।

२३२ कमलाव्रतधारिणे नमः ।

२३३ कमलाक्षाय नमः ।

२३४ पुरन्दराय नमः ।

२३५ सौभाग्याधिकचित्ताय नमः ।

२३६ महामायिने नमः ।

२३७ महोत्कटाय नम ।

२३८ ताडकारये नमः ।

२३९ सुरत्रात्रे नमः ।

२४० मारीचक्षोभकारकाय नमः ।

२४१ विश्वामित्रप्रियाय नमः ।

२४२ दान्ताय नमः ।

२४३ रामाय नमः ।

२४४ राजीवलोचनाय नमः ।

२४५ लङ्काधिपकुलध्वंसिने नमः ।

२४६ विभीषणवरप्रदाय नमः ।

२४७ सीतानन्दकराय नमः ।

२४८ रामाय नमः ।

२४९ वीराय नमः ।

२५० वारिधिबन्धनाय नमः ।

२५१ खरदूषणसंहारिणे नमः ।

२५२ संकेतपुरवासनाय नमः ।

२५३ चन्द्रावलीपतये नमः ।

२५४ कूलाय नमः ।

२५५ केशि-कंस-वधाय नमः ।
१५६ अमलाय नमः ।
२५७ माधवाय नमः ।
२५८ मधुघ्ने नमः ।
२५९ माध्विने नमः ।
२६० माध्वीकाय नमः ।
२६१ माधवी-विभवे नमः ।
२६२ मुञ्जाटवी-गाहमानाय नमः ।
२६३ धेनुकारये नमः ।
२६४ धरात्मजाय नमः ।
२६५ वंशीवटविहारिणे नमः ।
२६६ गोवर्द्धनवनाश्रयाय नमः ।
२६७ तालवनोद्देशिने नमः ।
२६८ भाण्डीरवनशङ्खघ्ने नमः ।
२६९ तृणावर्त-कृपाकारिणे नमः ।
२७० वृषभानुसुता-पतये नमः ।
२७१ राधाप्राणसमाय नमः ।
२७२ राधावदनाब्जमधुव्रताय नमः ।
२७३ गोपीरञ्जन दैवज्ञाय नमः ।
२७४ लीलाकमलपूजिताय नमः ।
२७५ क्रीड़ाकमलसन्दोहाय नमः ।
२७६ गोपीकाप्रीतिरञ्जनाय नमः ।
२७७ रञ्जकाय नमः ।
२७८ रञ्जनाय नमः ।
२७९ रङ्गाय नमः ।
२८० रङ्गिणे नमः ।
२८१ रङ्गमहीरुहाय नमः ।
२८२ कामाय नमः ।
२८३ कामारिभक्ताय नमः ।
२८४ पुराणपुरुषाय नमः ।

२८५ कवये नमः ।

२८६ नारदाय नमः ।

२८७ देवलाय नमः ।

२८८ भीमाय नम ।

२८९ बालाय नमः ।

२९० बालामुखाम्बुजाय नमः ।

२९१ अम्बुजाय नमः ।

२९२ ब्रह्मणे नमः ।

२९३ साक्षिणे नमः ।

२९४ योगिने नमः ।

२९५ दत्तवराय नमः ।

२९६ मुनये नमः ।

२९७ ऋषभाय नमः ।

२९८ पर्वताय नमः ।

२९९ ग्रामाय नमः ।

३०० नदीपवनवल्लभाय नमः ।

३०१ पद्मनाभाय नमः ।

३०२ सुरज्येष्ठाय नमः ।

३०३ ब्रह्मणे नमः ।

३०४ रुद्राय नमः ।

३०५ अहिभूषिताय नमः ।

३०६ गणानां त्राणकर्त्रे नमः ।

३०७ गणेशाय नमः ।

३०८ ग्रहिलाय नमः ।

३०९ ग्रहिणे नमः ।

३१० गणाश्रयाय नमः ।

३११ गणाध्यक्षाय नमः ।

३१२ क्रोडीकृतजगत्त्रयाय नमः ।

३१३ यादवेन्द्राय नमः ।

३१४ द्वारकेन्द्राय नमः ।

३१५ मथुरावल्लभाय नमः ।
३१६ धुरिणे नमः ।
३१७ भ्रमराय नमः ।
३१८ कुन्तलिने नमः ।
३१९ कुन्तीसुतरक्षिणे नमः ।
३२० महामखिने नमः ।
३२१ यमुनावरदात्रे नमः ।
३२२ कश्यपस्य वरप्रदाय नमः ।
३२३ शंखचूड़वधाय नमः ।
३२४ दामिने नमः ।
३२५ गोपीरक्षणतत्पराय नमः ।
३२६ पाञ्चजन्यकराय नमः ।
३२७ रामिणे नमः ।
३२८ त्रिरामिणे नमः ।
३२९ वनजाय नमः ।
३३० जयाय नमः ।
३३१ फाल्गुनाय नमः ।
३३२ फाल्गुन-सखाय नमः ।
३३३ विराध-वध-कारकाय नमः ।
३३४ रुक्मिणीप्राणनाथाय नमः ।
३३५ सत्यभामाप्रियंकराय नमः ।
३३६ कल्पवृक्षाय नमः ।
३३७ महावृक्षाय नमः ।
३३८ दानवृक्षाय नमः ।
३३९ महाफलाय नमः ।
३४० अङ्कुशाय नमः ।
३४१ भूसुराय नमः ।
३४२ भावाय नमः ।
३४३ भामकाय नमः ।
३४४ भ्रामकाय नमः ।

३४५ हरये नमः ।
३४६ सरलाय नमः ।
३४७ शाश्वताय नमः ।
३४८ वीराय नमः ।
३४९ यदुवंशिने नमः ।
३५० शिवात्मकाय नमः ।
३५१ प्रद्युम्नाय नमः ।
३५२ बलकर्त्त्रे नमः ।
३५३ प्रहर्त्त्रे नमः ।
३५४ दैत्यघ्ने नमः ।
३५५ प्रभवे नमः ।
३५६ महाधनाय नमः ।
३५७ महावीराय नमः ।
३५८ वनमाला-विभूषणाय नमः ।
३५९ तुलसीदाम-शोभाढ्याय नमः ।
३६० जलन्धरविनाशनाय नमः ।
३६१ शूराय नमः ।
३६२ सूर्याय नमः ।
३६३ अमृतण्डाय नमः ।
३६४ भास्कराय नमः ।
३६५ विश्वपूजिताय नमः ।
३६६ रवये नमः ।
३६७ तमोघ्ने नमः ।
३६८ वह्नये नमः ।
३६९ वाडवाय नमः ।
३७० वडवानलाय नमः ।
३७१ दैत्य-दर्प-विनाशिने नमः ।
३७२ गरुडाय नमः ।
३७३ गरुडाग्रजाय नमः ।
३७४ गोपीनाथाय नमः ।

३७५ महानाथाय नमः ।
३७६ वृन्दानाथाय नमः ।
३७७ विरोधकाय नमः ।
३७८ प्रपञ्चिने नमः ।
३७९ पञ्चरूपाय नमः ।
३८० लतायै नमः ।
३८१ गुल्माय नमः ।
३८२ गोपतये नमः ।
३८३ गङ्गायै नमः ।
३८४ यमुनारूपाय नमः ।
३८५ गोदायै नमः ।
३८६ वेत्रवत्यै नमः ।
३८७ कावेर्यै नमः ।
३८८ नर्मदायै नमः ।
३८९ ताप्त्यै नमः ।
३९० गण्डक्यै नमः ।
३९१ सरय्वै नमः ।
३९२ रजसे नमः ।
३९३ राजसाय नमः ।
३९४ तामसाय नमः ।
३९५ सत्विने नमः ।
३९६ सर्वाङ्गिणे नमः ।
३९७ सर्वलोचनाय नमः ।
३९८ सुधामयाय नमः ।
३९९ अमृतमयाय नमः ।
४०० योगिनीवल्लभाय नमः ।
४०१ शिवाय नमः ।
४०२ बुद्धाय नमः ।
४०३ बुद्धिमतां श्रेष्ठाय नमः ।
४०४ विष्णवे नमः ।

४०५ जिष्णवे नमः ।
४०६ शचीपतये नमः ।
४०७ वंशिने नमः ।
४०८ वंशीधराय नमः ।
४०९ लोक-विलोकाय नमः ।
४१० मोहनाशनाय नमः ।
४११ रव-रावाय नमः ।
४१२ रवाय नमः ।
४१३ रावाय नमः ।
४१४ बलाय नमः ।
४१५ बालाय नमः ।
४१६ बलाहकाय नमः ।
४१७ शिवाय नमः ।
४१८ रुद्राय नमः ।
४१९ नलाय नमः ।
४२० नीलाय नमः ।
४२१ लाङ्गुलिने नमः ।
४२२ लाङ्गुलाश्रयाय नमः ।
४२३ पारदाय नमः ।
४२४ पावनाय नमः ।
४२५ हंसाय नमः ।
४२६ हंसारूढाय नमः ।
४२७ जगत्पतये नमः ।
४२८ मोहनीमोहनाय नमः ।
४२९ मायायै नमः ।
४३० महामायिने नमः ।
४३१ महासुखिने नमः ।
४३२ वृषाय नमः ।
४३३ वृषाकपये नमः ।
४३४ कालाय नमः ।

४३५ कालीदमन-कारकाय नमः ।
४३६ कुब्जाभाग्यप्रदाय नमः ।
४३७ वीराय नमः ।
४३८ रजक-क्षय-कारकाय नमः ।
४३९ कोमलाय नमः ।
४४० वारुणी-राजाय नमः ।
४४१ जलजाय नमः ।
४४२ जलधारकाय नमः ।
४४३ हारकाय नमः ।
४४४ सर्वपापघ्नाय नमः ।
४४५ परमेष्ठिने नमः ।
४४६ पितामहाय नमः ।
४४७ खड्गधारिणे नमः ।
४४८ कृपाकारिणे नमः ।
४४९ राधारमण-सुन्दराय नमः ।
४५० द्वादशारण्य-संभोगिने नमः ।
४५१ शेषनागफणालयाय नमः ।
४५२ कामाय नमः ।
४५३ श्यामाय नमः ।
४५४ सुख-श्रीदाय नमः ।
४५५ श्रीहाय नमः ।
४५६ श्रीदाय नमः ।
४५७ पत्ये नमः ।
४५८ कृतिने नमः ।
४५९ हरये नमः ।
४६० नारायणाय नमः ।
४६१ नाराय नमः ।
४६२ नरोत्तमाय नमः ।
४६३ इषुप्रियाय नमः ।
४६४ गोपालीचित्तहर्त्रे नमः ।

४६५ कर्त्रे नमः ।
४६६ संसारतारकाय नमः ।
४६७ आदिदेवाय नमः ।
४६८ महादेवाय नमः ।
४६९ गौरीगुरवे नमः ।
४७० अनाश्रयाय नमः ।
४७१ साधवे नमः ।
४७२ माधवे नमः ।
४७३ विधवे नमः ।
४७४ धात्रे नमः ।
४७५ त्रात्रे नमः ।
४७६ अक्रूरपरायणाय नमः ।
४७७ रोलम्बिने नमः ।
४७८ हयग्रीवाय नमः ।
४७९ वानरारये नमः ।
४८० वनाश्रयाय नमः ।
४८१ वनाय नमः ।
४८२ वनिने नमः ।
४८३ वनाध्यक्षाय नमः ।
४८४ महाबन्धाय नमः ।
४८५ महामुनये नमः ।
४८६ स्यमन्तकमणिप्राज्ञाय नमः ।
४८७ विज्ञाय नमः ।
४८८ विघ्नविघातकाय नमः ।
४८९ गोवर्द्धनाय नमः ।
४९० वर्द्धनीयाय नमः ।
४९१ वर्द्धनी-वर्द्धन-प्रियाय नमः ।
४९२ वर्द्धन्याय नमः ।
४९३ वर्द्धनाय नमः ।
४९४ वर्द्धिने नमः ।

४९५ वर्द्धिष्णवे नमः ।
४९६ सुमुखाय नमः ।
४९७ प्रियाय नमः ।
४९८ वर्द्धिताय नमः ।
४९९ वृद्धकाय नमः ।
५०० वृद्धाय नमः ।
५०१ वृन्दारक-जनप्रियाय नमः ।
५०२ गोपालरमणीभर्त्रे नमः ।
५०३ साम्बकुष्ठविनाशनाय नमः ।
५०४ रुक्मिणीहरणप्रेम्णे नमः ।
५०५ प्रेमिणे नमः ।
५०६ चन्द्रावलीपतये नमः ।
५०७ श्रीकर्त्रे नमः ।
५०८ विश्वभर्त्रे नमः ।
५०९ नारायणनराय नमः ।
५१० बलिने नमः ।
५११ गणाय नमः ।
५१२ गणपतये नमः ।
५१३ दत्तात्रेयाय नमः ।
५१४ महामुनये नमः ।
५१५ व्यासाय नमः ।
५१६ नारायणाय नमः ।
५१७ दिव्याय नमः ।
५१८ भव्याय नमः ।
५१९ भावुक-धारकाय नमः ।
५२० स्वर्नमः ।
५२१ श्रेयसे नमः ।
५२२ शं नमः ।
५२३ शिवाय नमः ।
५२४ भद्राय नमः ।

५२५ भावुकाय नमः ।
५२६ भविकाय नमः ।
५२७ शुभाय नमः ।
५२८ शुभात्मकाय नमः ।
५२९ शुभाय नमः ।
५३० शास्त्रे नमः ।
५३१ प्रशस्ताय नमः ।
५३२ मेघनादघ्ने नमः ।
५३३ ब्रह्मण्यदेवाय नमः ।
५३४ दीनानामुद्धारकरणक्षमाय नमः ।
५३५ कृष्णाय नमः ।
५३६ कमलपत्राक्षाय नमः ।
५३७ कृष्णाय नमः ।
५३८ कमललोचनाय नमः ।
५३९ कृष्णाय नमः ।
५४० कामिने नमः ।
५४१ सदाकृष्णाय नमः ।
५४२ समस्त-प्रियकारकाय नमः ।
५४३ नन्दाय नमः ।
५४४ नन्दिने नमः ।
५४५ महानादिने नमः ।
५४६ मादिने नमः ।
५४७ मादनकाय नमः ।
५४८ किलिने नमः ।
५४९ मिलिने नमः ।
५५० हिलिने नमः ।
५५१ गिलिने नमः ।
५५२ गोलिने नमः ।
५५३ गोलाय नमः ।
५५४ गोलालयाय नमः ।

५५५ गुलिने नमः ।
५५६ गुग्गुलिने नमः ।
५५७ मारकिने नमः ।
५५८ शाखिने नमः ।
५५९ वटाय नमः ।
५६० पिप्पलकाय नमः ।
५६१ कृतिने नमः ।
५६२ म्लेच्छघ्ने नमः ।
५६३ कालहर्त्रे नमः ।
५६४ यशोदायशसे नमः ।
५६५ अच्युताय नमः ।
५६६ केशवाय नमः ।
५६७ विष्णवे नमः ।
५६८ हरये नमः ।
५६९ सत्याय नमः ।
५७० जनार्दनाय नमः ।
५७१ हंसाय नमः ।
५७२ नारायणाय नमः ।
५७३ नीलाय नमः ।
५७४ लीनाय नमः ।
५७५ भक्तिपरायणाय नमः ।
५७६ जानकीवल्लभाय नमः ।
५७७ रामाय नमः ।
५७८ विरामाय नमः ।
५७९ विषनाशनाय नमः ।
५८० सहभानवे नमः ।
५८१ महाभानवे नमः ।
५८२ वीरभानवे नमः ।
५८३ महोदधये नमः ।
५८४ समुद्राय नमः ।

५८५ अब्धये नमः ।
५८६ अकूपाराय नम ।
५८७ पारावाराय नमः ।
५८८ सरित्पतये नमः ।
५८९ गोकुलानन्दकारिणे नमः ।
५९० प्रतिज्ञापरिपालकाय नमः ।
५९१ सदारामाय नमः ।
५९२ कृपारामाय नमः ।
५९३ महारामाय नमः ।
५९४ धनुर्धराय नमः ।
५९५ पर्वताय नमः ।
५९६ पर्वताकाराय नमः ।
५९७ गयाय नमः ।
५९८ गेयाय नमः ।
५९९ द्विजप्रियाय नमः ।
६०० कम्बलाश्वतराय नमः ।
६०१ रामाय नमः ।
६०२ रामायणप्रवर्त्तकाय नमः ।
६०३ द्यवे नमः ।
६०४ दिवाय नमः ।
६०५ दिवसाय नमः ।
६०६ दिव्याय नमः ।
६०७ भव्याय नमः ।
६०८ भाविभयापहाय नमः ।
६०९ पार्वतीभाग्यसहिताय नमः ।
६१० भर्त्रे नमः ।
६११ लक्ष्मीविलासवते नमः ।
६१२ विलासिने नमः ।
६१३ साहसिने नमः ।
६१४ सर्विणे नमः ।

६१५ गर्विणे नमः ।

६१६ गर्वितलोचनाय नमः ।

६१७ मुरारये नमः ।

६१८ लोकधर्मज्ञाय नमः ।

६१९ जीवनाय नमः ।

६२० जीवनान्तकाय नमः ।

६२१ यमाय नमः ।

६२२ यमारये नमः ।

६२३ यमनाय नमः ।

६२४ यामिने नमः ।

६२५ यामविधायकाय नमः ।

६२६ वंशुलिने नमः ।

६२७ पांशुलिने नमः ।

६२८ पांशवे नमः ।

६२९ पाण्डवे नमः ।

६३० अर्जुनवल्लभाय नमः ।

६३१ ललिताचन्द्रिकामालिने नमः ।

६३२ मालिने नमः ।

६३३ मालाम्बुजाश्रयाय नमः ।

६३४ अम्बुजाक्षाय नमः ।

६३५ महायक्षाय नमः ।

४३६ दक्षाय नमः ।

६३७ चिन्तामणिप्रभवे नमः ।

६३८ मणये नमः ।

६३९ दिनमणये नमः ।

६४० केदाराय नमः ।

६४१ वदरीश्रयाय नमः ।

६४२ वदरीवनसंप्रीताय नमः ।

६४३ व्यासाय नमः ।

६४४ सत्यवतीसुताय नमः ।

६४५ अमरारिनिहन्त्रे नमः ।

६४६ सुधासिन्धुविधूदयाय नमः ।

६४७ चन्द्राय नमः ।

६४८ रवये नमः ।

६४९ शिवाय नमः ।

६५० शूलिने नमः ।

६५१ चक्रिणे नमः ।

६५२ गदाधराय नमः ।

६५३ श्रीकर्त्रे नमः ।

६५४ श्रीपतये नमः ।

६५५ श्रीदाय नमः ।

६५६ श्रीदेवाय नमः ।

६५७ देवकीसुताय नमः ।

६५८ श्रीपतये नमः ।

६५९ पुण्डरीकाक्षाय नमः ।

६६० पद्मनाभाय नमः ।

६६१ जगत्पतये नमः ।

६६२ वासुदेवाय नमः ।

६६३ अप्रमेयात्मने नमः ।

६६४ केशवाय नमः ।

६५५ गरुड़ध्वजाय नमः ।

६६६ नारायणाय नमः ।

६६७ परंधाम्ने नमः ।

६६८ देवदेवाय नमः ।

६६९ महेश्वराय नमः ।

६७० चक्रपाणये नमः ।

६७१ कलापूर्णाय नमः ।

६७२ वेदवेद्याय नमः ।

६७३ दयानिधये नमः ।

६७४ भगवते नमः ।

६७५ सर्वभूतेशाय नमः ।
६७६ गोपालाय नमः ।
६७७ सर्वपालकाय नमः ।
६७८ अनन्ताय नमः ।
६७९ निर्गुणाय नमः ।
६८० नित्याय नमः ।
६८१ निर्विकल्पाय नमः ।
६८२ निरञ्जनाय नमः ।
६८३ निराधाराय नमः ।
६८४ निराकाराय नमः ।
६८५ निराभासाय नमः ।
६८६ निराश्रयाय नमः ।
६८७ पुरुषाय नमः ।
६८८ प्रणवातीताय नमः ।
६८९ मुकुन्दाय नमः ।
६९० परमेश्वराय नमः ।
६९१ क्षणावनये नमः ।
६९२ सार्वभौमाय नमः ।
६९३ वैकुण्ठाय नमः ।
६९४ भक्तवत्सलाय नमः ।
६९५ विष्णवे नमः ।
६९६ दामोदराय नमः ।
६९७ कृष्णाय नमः ।
६९८ माधवाय नमः ।
६९९ मथुरापतये नमः ।
७०० देवकीगर्भसम्भूताय नमः ।
७०१ यशोदावत्सलाय नमः ।
७०२ हरये नमः ।
७०३ शिवाय नमः ।
७७४ संकर्षणाय नमः ।

७०५ शम्भवे नमः ।

७०६ भूतनाथाय नमः ।

७७७ दिवस्पतये नमः ।

७०८ अव्ययाय नमः ।

७०९ सर्वधर्मज्ञाय नमः ।

७१० निर्मलाय नमः ।

७११ निरुपद्रवाय नमः ।

७१२ निर्वाणनायकाय नमः ।

७१३ नित्याय नमः ।

७१४ नीलजीमूतसन्निभाय नमः ।

७१५ कलाक्षयाय नमः ।

७१६ सर्वज्ञाय नमः ।

७१७ कमलारूपतत्पराय नमः ।

७१८ हृषीकेशाय नमः ।

७१९ पीतवाससे नमः ।

७२० वसुदेवप्रियात्मजाय नमः ।

७ .१ नन्दगोपकुमारार्याय नमः ।

७२२ नवनीताशनाय नमः ।

७२३ विभवे नमः ।

७२४ पुराणपुरुषाय नमः ।

७२५ श्रेष्ठाय नमः ।

७२६ शंखपाणये नमः ।

७२७ सुविक्रमाय नमः ।

७२८ अनिरुद्धाय नमः ।

७२९ चक्ररथाय नमः ।

७३० शार्ङ्गपाणये नमः ।

७३१ चतुर्भुजाय नमः ।

७३२ गदाधराय नमः ।

७३३ सुरार्तिघ्नाय नमः ।

७३४ गोविन्दाय नमः ।

७३५ नन्दकायुधाय नमः ।

७३६ वृन्दावनचराय नमः ।

७३७ शौरये नमः ।

७३८ वेणुवाद्यविशारदाय नमः ।

७३९ तृणावर्त्तान्तिकाय नमः ।

७४० भीमसाहसाय नमः ।

७४१ बहुविक्रमाय नमः ।

७४२ शकटासुरसंहारिणे नमः ।

७४३ बकासुरविनाशनाय नमः ।

७४४ धेनुकासुरसंहारिणे नमः ।

७४५ पूतनारये नमः ।

७४६ नृकेसरिणे नमः ।

७४७ पितामहाय नमः ।

७४८ गुरुवे नमः ।

७४९ साक्षिणे नमः ।

७५० प्रत्यगात्मने नमः ।

७५१ सदाशिवाय नमः ।

७५२ अप्रमेयप्रभवे नमः ।

७५३ प्राज्ञाय नमः ।

७५४ अप्रतर्क्याय नमः ।

७५५ स्वप्नवर्द्धनाय नमः ।

७५६ धन्याय नमः ।

७५७ मान्याय नमः ।

७५८ भवाय नमः ।

७५९ भावाय नमः ।

७६० धीराय नमः ।

७६१ शान्ताय नमः ।

७६२ जगद्गुरुवे नमः ।

७६३ अन्तर्यामिणे नमः ।

७७४ ईश्वराय नमः ।

७६५ दिव्याय नमः ।

७६६ दैवज्ञाय नमः ।

७६७ देवसंस्तुताय नमः ।

७६८ क्षीराब्धिशयनाय नमः ।

७६९ धात्रे नमः ।

७७० लक्ष्मीवते नमः ।

७७१ लक्ष्मणाग्रजाय नमः ।

७७२ धात्रीपतये नमः ।

७७३ अमेयात्मने नमः ।

७७४ चन्द्रशेखरपूजिताय नमः ।

७७५ लोकसाक्षिणे नमः ।

७७६ जगच्चक्षुषे नमः ।

७७७ पुण्यचारित्रकीर्तनाय नमः ।

७७८ कोटिमन्मथसौन्दर्याय नमः ।

७८० जगन्मोहनविग्रहाय नमः ।

७८० मन्दस्मिततनाय नमः ।

७८१ गोपगोपिकापरवेष्टिताय नमः ।

७८२ फुल्लारविन्दनयनाय नमः ।

७८३ चाणूरान्ध्रनिषूदनाय नमः ।

७८४ इन्दीवरदलश्यामाय नमः ।

७८४ बर्हिबर्हावतंसकाय नमः ।

७८६ मुरलीनिनदाह्लादाय नमः ।

७८७ दिव्यमाल्याम्बरावृताय नमः ।

७८८ सुकपोलयुगाय नमः ।

७८९ सुभ्रू युगलाय नमः ।

७९० सुललाटकाय नमः ।

७९१ कम्बुग्रीवाय नमः ।

७९२ विशालाक्षाय नमः ।

७९३ लक्ष्मीवते नमः ।

७९४ शुभलक्षणाय नमः ।

७९५ पीनवक्षसे नमः ।
७९६ चतुर्बाहवे नमः ।
७९७ चतुर्मूर्तये नमः ।
७९८ त्रिविक्रमाय नमः ।
७९९ कलङ्करहिताय नमः ।
८०० शुद्धाय नमः ।
८०१ दुष्टशत्रुनिवर्हणाय नमः ।
८०२ किरीटकुण्डलधराय नमः ।
८०३ कटकाङ्गदमण्डिताय नमः ।
८०४ मुद्रिकाभरणोपेताय नमः ।
८०५ कटिसूत्रविराजिताय नमः ।
८०६ मञ्जीररञ्जितपदाय नमः ।
८०७ सर्वाभरणभूषिताय नमः ।
८०८ विन्यस्तपादयुगलाय नमः ।
८०९ दिव्यमङ्गलविग्रहाय नमः ।
८१० गोपिकानयनानन्दाय नमः ।
८११ पूर्णचन्द्रनिभाननाय नमः ।
८१२ समस्तजगदानन्दाय नमः ।
८१३ सुन्दराय नमः ।
८१४ लोकनन्दनाय नमः ।
८१५ यमुनातीरसञ्चारिणे नमः ।
८१६ राधामन्मथवैभवाय नमः ।
८१७ गोपनारीप्रियाय नमः ।
८१८ दान्ताय नमः ।
८१९ गोपीवस्त्रापहारकाय नमः ।
८२० शृङ्गारमूर्तये नमः ।
८२१ श्रीधाम्ने नमः ।
८२२ तारकाय नमः ।
८२३ मूलकारणाय नमः ।
८२४ सृष्टिसंरक्षणोपायाय नमः ।

८२५ क्रूरासुरविभञ्जनाय नमः ।
८२६ नरकासुरसंहारिणे नमः ।
८२७ मुरारये नमः ।
८२८ वैरिमर्दनाय नमः ।
८२९ आदितेयप्रियाय नमः ।
८३० दैत्यभीकराय नमः ।
८३१ यदुशेखराय नमः ।
८३२ जरासन्धकुलध्वंसिने नमः ।
८३३ कंसरातये नमः ।
८३४ सुविक्रमाय नमः ।
८३५ पुण्यश्लोकाय नमः ।
८३६ कीर्तनीयाय नमः ।
८३७ यादवेन्द्राय नमः ।
८३८ जगन्नुताय नमः ।
८३९ रुक्मिणीरमणाय नमः ।
८४० सत्यभामाजाम्बवतीप्रियाय नमः ।
८४१ मित्रविन्दा-नाग्नजिती-लक्ष्मणा-समुपासिताय नमः ।
८४२ सुधाकरकुलेजाताय नमः ।
८४३ अनन्तप्रबलविक्रमाय नमः ।
८४४ सर्वसौभाग्यसम्पन्नाय नमः ।
८४५ द्वारकापट्टनस्थिताय नमः ।
८४६ भद्रासूर्यसुतानाथाय नमः ।
८४७ लीलामानुषविग्रहाय नमः ।
८४८ सहस्रषोडशस्त्रीशाय नमः ।
८४९ भोगमोक्षैकदायकाय नमः ।
८५० वेदान्तवेद्याय नमः ।
८५१ संवेद्याय नमः ।
८५२ वैद्याय नमः ।
८५३ ब्रह्माण्डनायकाय नमः ।

८५४ गोवर्द्धनधराय नमः ।

८५५ नाथाय नमः ।

८५६ सर्वजीवदयापराय नमः ।

८५७ मूर्तिमते नमः ।

८५८ सर्वभूतात्मते नमः ।

८५९ आर्त्तत्राणपरायणाय नमः ।

८६० सर्वज्ञाय नमः ।

८६१ सर्वसुलभाय नमः ।

८६२ सर्वशास्त्रविशारदाय नमः ।

८६३ षड्गुणैश्वर्यसंपन्नाय नमः ।

८६४ पूर्णकामाय नमः ।

८६५ धुरन्धराय नमः ।

८६६ महानुभावाय नमः ।

८६७ कैवल्यनायकाय नमः ।

८६८ लोकनायकाय नमः ।

८६९ आदिमध्यान्तरहिताय नमः ।

८७० शुद्धसात्विकविग्रहाय मनः ।

८७१ असमानाय नमः ।

८७२ समस्तात्मने नमः ।

८७३ शरणागतवत्सलाय नमः ।

८७४ उत्पत्तिस्थितिसंहारकारणाय नमः ।

८७५ सर्वकारणाय नमः ।

८७६ गम्भीराय नमः ।

८७७ सर्वभावज्ञाय नमः ।

८७८ सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः ।

८७९ विष्वक्सेनाय नमः ।

८८० सत्यसन्धाय नमः ।

८८१ सत्यवाचे नमः ।

८८२ सत्यविक्रमाय नमः ।

८८३ सत्यव्रताय नमः ।
८८४ सत्यरताय नमः ।
८८५ सत्यधर्मपरायणाय नमः ।
८८६ आपन्नार्तिप्रशमनाय नमः ।
८८७ द्रौपदीमानरक्षकाय नमः ।
८८८ कन्दर्पजनकाय नमः ।
८८९ प्राज्ञाय नमः ।
८९० जगन्नाटकवैभवाय नमः ।
८९१ भक्तवश्याय नमः ।
८९२ गुणातीताय नमः ।
८९३ सर्वैश्वर्यप्रदायकाय नमः ।
८९४ दमघोषसुतद्वेषिणे नमः ।
८९५ बाणबाहुविखण्डनाय नमः ।
८९६ भीष्मभक्तिप्रदाय नमः ।
८९७ दिव्याय नमः ।
८९८ कौरवान्वयनाशनाय नमः ।
८९९ कौन्तेयप्रियबन्धवे नमः ।
९०० पार्थस्यन्दनसारथये नमः ।
९०१ नरसिंहाय नमः ।
९०२ महावीराय नमः ।
९०३ स्तम्भजाताय नमः ।
९०४ महाबलाय नमः ।
९०५ प्रह्लादवरदाय नमः ।
९०६ सत्याय नमः ।
९०७ देवपूज्याय नमः ।
९०८ अभयङ्कराय नमः ।
९०९ उपेन्द्राय नमः ।
९१० इन्द्रावरजाय नमः ।
९११ वामनाय नमः ।
९१२ बलिबन्धनाय नमः ।

६१३ गजेन्द्रवरदाय नमः ।

६१४ स्वामिने नमः ।

६१५ सर्वदेवनमस्कृताय नमः ।

६१६ शेषपर्यङ्कशयनाय नमः ।

६१७ वैनतेयरथाय नमः ।

६१८ जयिने नमः ।

६१९ अव्याहतबलैश्वर्यसम्पन्नाय नमः ।

६२० पूर्णमानसाय नमः ।

६२१ योगेश्वरेश्वराय नमः ।

६२२ साक्षिणे नमः ।

६२३ क्षेत्रज्ञाय नमः ।

६२४ ज्ञानदायकायः ।

६२५ योगिहृत्पङ्कजावासाय नमः ।

६२६ योगमायासमन्विताय नमः ।

६२७ नादविन्दुकलातीताय नमः ।

६२८ चतुर्वर्गफलप्रदाय नमः ।

६२९ सुषुम्नामार्गसञ्चारिणे नमः ।

६३० देहस्यान्तरसंस्थिताय नमः ।

६३१ देहेन्द्रियमनःप्राणसाक्षिणे नमः ।

६३२ चेतःप्रसादकाय नमः ।

६३३ सूक्ष्माय नमः ।

६३४ सर्वगताय नमः ।

६३५ देहिने नमः ।

६३६ ज्ञानदर्पणगोचराय नमः ।

६३७ तत्त्वत्रयात्मकाय नमः ।

६३८ अव्यक्ताय नमः ।

६३९ कुण्डलीसमुपाश्रिताय नमः ।

३४० ब्रह्मण्याय नमः ।

६४१ सर्वधर्मज्ञाय नमः ।

६४२ शान्ताय नमः ।

९४३ दान्ताय नमः ।

९४४ गतक्लमाय नमः ।

९४५ श्रीनिवासाय नमः ।

९४६ सदानन्दाय नमः ।

९४७ विश्वमूर्तये नमः ।

९४८ महाप्रभवे नमः ।

९४९ सहस्रशीर्ष्णे नमः ।

९५० पुरुषाय नमः ।

९५१ सहस्राक्षाय नमः ।

९५२ सहस्रपदे नमः ।

९५३ समस्तभुवनाधाराय नमः ।

९५४ समस्तप्राणरक्षकाय नमः ।

९५५ समस्ताय नमः ।

९५६ सर्वभावज्ञाय नमः ।

९५७ गोपिकाप्राणवल्लभाय नमः ।

९५८ नित्योत्सवाय नमः ।

९५९ नित्यसौख्याय नमः ।

९६० नित्यश्रिये नमः ।

९६१ नित्यमङ्गलाय नमः ।

९६२ व्यूहार्चिताय नमः ।

९६३ जगन्नाथाय नमः ।

९६४ श्रीवैकुण्ठपुराधिपाय नमः ।

९६५ पूर्णानन्दघनीभूताय नमः ।

९६६ गोपवेषधराय नमः ।

९६७ हरये नमः ।

९६८ कलापकुसुमश्यामाय नमः ।

९६९ कोमलाय नमः ।

९७० शान्तविग्रहाय नमः ।

३७१ गोपाङ्गनावृताय नमः ।

९७२ अनन्ताय नमः ।

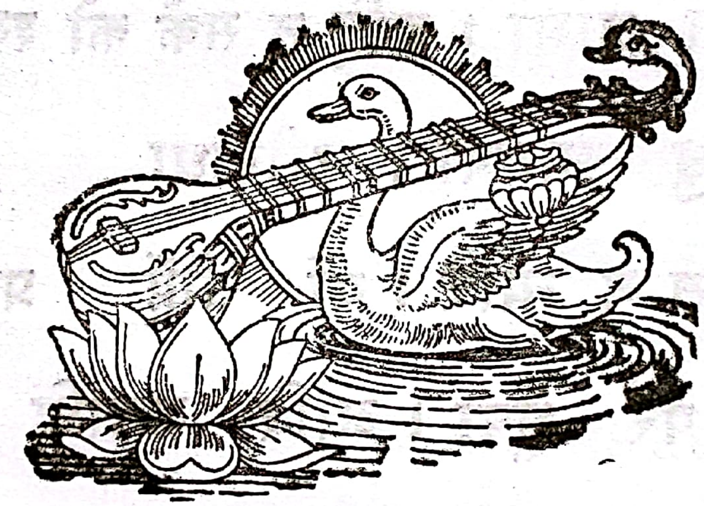
९७३ वृन्दावनसमाश्रयाय नमः ।
९७४ गोपालकामिनीजाराय नमः ।
९७५ चौरजारशिखामणये नमः ।
९७६ पराय नमः ।
९७७ ज्योतिषे नमः ।
९७८ पराकाशाय नमः ।
९७९ परावासाय नमः ।
९८० परिस्फुटाय नमः ।
९८१ अष्टदशाक्षराय नमः ।
९८२ मन्त्रव्यापकाय नमः ।
९८३ लोकपावनाय नमः ।
९८४ सप्तकोटिमहामंत्रशेखराय नमः ।
९८५ देवशेखराय नमः ।
९८६ ज्ञानविज्ञानसन्धानाय नमः ।
९८७ तेजोराशये नमः ।
९८८ जगत्पतये नमः ।
९८९ भक्तलोकप्रसन्नात्मने नमः ।
९९० भक्तमन्दारविग्रहाय नमः ।
९९१ भक्तदारिद्रचदमनाय नमः ।
९९२ भक्तानांप्रीतिदायकाय नमः ।
९९३ भक्ताधीनमनसे नमः ।
९९४ पूज्याय नमः ।
९९५ भक्तलोकशिवङ्कराय नमः ।
९९६ भक्तभीष्टप्रदाय नमः ।
९९७ सर्वभक्ताघौघनिकृन्तनाय नमः ।
९९८ अपारकरुणासिन्धवे नमः ।
९९९ भगवते नमः ।
१००० भक्ततत्पराय नमः ।

।। इति श्रीगोपालसहस्रनामावली समाप्ता ।।
।। ॐ तत्सदिति श्रीराधागोपालार्पणमस्तु ।।

* श्रीयुगल स्वरूप माधुर्य *

श्रीराधा अहलादनि रूपा । आनँदघन श्रीकृष्ण अनूपा ॥
राधा कृष्ण कृष्ण हैं राधा । सम स्वरूप निजरूप अगाधा ॥
दोऊ रसिक दोऊ रस धामा । कहि न सकै को श्याम को श्यामा ॥
श्रीमाधव सुख - सिन्धु स्वरूपा । श्रीराधा तरंग अनूपा ॥
जल तरंग ज्यों होत न न्यारे । यों सोहैं प्रानन प्रतिपारे ॥
सत्य असत्य परे पर भूपा । आदि अनादि एकरस रूपा ॥
ततसुख - सुखी सकल सुखरासी । एक दूजे के अननि उपासी ॥
कणकलता सम शोभित श्यामा । श्याम तमाल रूप अभिरामा ॥
अति अगाध छवि वरनि न जाई । 'जयकिशोर' तुव पद शरणाई ॥

卐



नान्या गतिः कृष्णपदारविन्दात्

संदृश्यते ब्रह्मशिवादिवन्दितात् ।

भक्तेच्छयोपात्तसुचिन्त्यविग्रहा

दचिन्त्यशक्तेरविचिन्त्यसाशयात् ।।

—जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य